Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-34
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 15 नवम्बर से 21 नवम्बर 2017 तक
मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी से मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

अब राजनीतिक.. पृष्ठ- 3

गर्म पानी नींबू के सेवन.... पृष्ठ- 4

गुरु गुणों की खान. पृष्ठ- 5

नाथूराम गोडसे पर... पृष्ठ- 9

राजनीति स्वारथ्य के... पृष्ठ- 12

- हिन्दुत्व के स्वर्णिम इतिहास से क्यों भयभीत हैं विदेशी लेखक
- इतिहास स्वयं को दोहराता है
- डॉ॰ अम्बेडकर ने धर्मान्तरण के लिए इस्लाम या ईसाइयत को क्यों नहीं चुना? क्यों बौद्ध धर्म को प्रधानता दी?
- कश्मीर को सीरिया बनाने की तैयारी!

अखिल भारत हिन्दू महासभा प्रांतीय अधिवेशन के अवसर पर विशाल हिन्दू सम्मेलन का आयोजन

● संवाददाता ●

दिनांक ०४ नवम्बर २०१७ को हरमू मैदान, राँची, झारखंड में अखिल भारत हिन्दू महासभा के प्रांतीय अधिवेशन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय महासचिव, प्रमोद जोशी, साध्वी पूजा सकुन पांडेय, राजश्री चौधरी ने द्वीप प्रज्जवलित कर सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन में मन्नू तिवारी, रेखा रानी, ईश्वर चन्द्र गुप्ता, सत्येम श्रीवास्तव, बबल पाण्डे, अनिल सिंह, संतोष कुमार, सुरेन्द्र सिंह, प्रमोद पाठक, संजय पांडेय, सिद्वार्थ छाबड़ा, प्रमोद टाइगर, सागर राम, विजय मिश्रा आदि प्रदेश नेता उपस्थित थे। सभा को सम्बोधित करते हुए अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक ने कहा कि हम एक देश, एक भाषा, शेष पृष्ठ 11 पर

भारत समेत ४ देशों की गोलबंदी से डरा चीन

● संवाददाता ●

चीन ने आशा जाहिर की है कि अमेरिका की मध्यस्थता में आयोजित होने वाला चर्तुपक्षीय सम्मेलन चीन को लक्षित नहीं है और यह समय के रुझानों के अनुरूप होगा और ये रुझान शांति, विकास और सहयोग के हैं। इस सम्मेलन में भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल है। पिछले हफ्ते अमेरिकी सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा था कि वॉशिंगटन भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर एक फलदायी, आदान–प्रदान में दिलचस्पी रखता है। वहीं जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे भी चारों शक्तियों के साथ कुछ ऐसी ही व्यवस्था के हिमायती हैं, जिसका प्रस्ताव वह राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टोक्यो यात्रा के दौरान कर सकते हैं। भारत ने प्रस्ताव को लेकर यह कहते हुए साकारात्मक प्रतिक्रिया दी है कि समान अभिरुचि के साथ प्रासंगिक एजेंडे पर काम करने वाले देशों के साथ वह खुले मन से सहयोग करने को तैयार है। चीन के विदेश मंत्री ने कहा है कि ऐसी व्यवस्था से क्षेत्र के देशों के बीच आपस में भरोसा कायम होगा और चीन के हितों को कोई हानि नहीं पहुंचेगी। उन्होंने एक बयान में कहा चीन को हालिया खबरों की जानकारी है और हम उम्मीद करते हैं कि उक्त देशों के बीच सहभागिता से शांति, विकास, सहयोग व साझेदारी जैसे समय के रुझानों का अनुपालन होगा। साथ ही, इससे क्षेत्रों व देशों के बीच समान सुरक्षा व विकास के लिए अनुकूल माहौल का निर्माण होगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि इससे देशों व क्षेत्रों में तीसरे पक्ष को निशाना बनाए बगैर आपसी भरोसा कायम होने के साथ–साथ शांति और समृद्धि भी आएगी। अमेरिका, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के लिए चिंता का विषय यह है कि भारत–प्रशांत क्षेत्र में चीन का दबदबा बढ़ रहा है और वह अपने महत्वाकांक्षी बेल्ट व रोड के जरिए संपर्क बनाने वाली परियोजनाओं का विकास कर रहा है। पिछले हफ्ते दक्षिण व मध्य एशिया शेष पृष्ठ 10 पर

देशी गाय हमारी माता क्यों?

माता की रक्षा करना हमारा धर्म और दायित्व है।

✍ नथमल रिणवां

भारतीय गौवंश अर्थात देशी गाय का दर्शन भी आजकल गौहत्या के कारण दुर्लभ होता जा रहा है। कृत्रिम ढंग से विकसित विदेशी गायों का दूध भी आजकल अधिकांशः उपयोग में लाया जा रहा है। विभिन्न देशों के द्वारा किए गए शोध तथा "डेविल इन मिल्क" नाम की पुस्तक में लेखक कीथ वुडफोर्ड ने सिद्ध किया है कि विदेशी ए–१ प्रोटीन वाली गायों का दूध मानव के लिए हानिकारक है। देशी गाय तथा विदेशी गाय में क्या गुण तथा अवगुण हैं, यह न तो गोपालकों को तथा न ही दूध पीने वाले लोगों को मालूम है। गोपालकों को इस तथ्य की जानकारी तो है कि ज्यादा दूध देने के कारण वे विदेशी नस्ल की गायों को प्राथमिकता देते हैं। जबकि हमारी भारतीय देशी गाय के दूध में ए–२ नामक प्रोटीन पाया जाता है जो माता के दूध के समान गुणकारी, पौष्टिक व सभी प्रकार की बीमारियों को रोकने में समर्थ है। पिछले कई दशकों के शोध ने यह सिद्ध कर दिया है कि विदेशी नस्ल की गायों का दूध प्रयोग करने से कई प्रकार की बीमारियाँ जैसे डायबिटीज टाईप–१, हार्टअटैक, मोटापा और कब्ज तथा क्षय रोग बहुत तेजी से बढ़ी है। हमारे देश में भी देशी और विदेशी गाय का संकरीकरण करने से हमारी गाय माता के नस्ल बिगड़ने पर दूध में ए–१ प्रोटीन बढ़ने लगा है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताया गया है। इससे न केवल शरीर की प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होती है बल्कि सहनशीलता की कमी आती है। विदेशी गाय तथा भारतीय गौवंश की आकृति और स्वभाव में काफी भिन्नता होती है जिसको समझने की नितांत आवश्यकता है।

भारतीय गौवंश देखने में सुन्दर व सींग वाला तथा इन के गले के नीचे लटकता हुआ गल, कम्बल होता है। इनकी पीठ पर गोलाई लिए हुए "कुकुद" एक उठा हुआ भाग होता है। जिसमें सूर्य केतु नाड़ी होती है जो सूर्य से स्वर्ण (सोना) खींचकर दूध और पंचगव्य को स्वर्णयुक्त कर देती है। इस कारण हमारी गाय माता का दूध व घी में पीला सुनहरापन होता है। देशी गौवंश का दूध, दही, घी, गौमूत्र और गोमय (गोबर) में स्वास्थ्यवर्धक पौषक तत्त्व एवं कीटनाशक गुण भी होते हैं। इनका दूध, दही और घी सुपाच्य होता है तथा मानव शरीर के लिए आवश्यक पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर होता है। नवजात शिशु से लेकर सौ वर्ष के बुर्जुग व्यक्ति भी इसके दूध को आसानी से पचा सकते हैं। दूध में विटामिन डी भी होता है जो हड्डियों को मजबूत बनाता है। देशी गौवंश जल्दी बीमार नहीं होता तथा चारा भी कम खाता है। देशी गाय का दूध पीने से सात्विकता बढ़ती है तथा स्मरण शक्ति तेज होती है। इनका दूध रोगों से लड़ने की क्षमता रखता है। इनका रम्भाना ममता भरा होता है। विदेशी गाय की पीठ बिल्कुल सपाट होती है (सुअर की तरह) इनके सींग होते ही नहीं या बहुत छोटे होते हैं। इनका दूध और घी सफेद होता है तथा कई रोगों को जन्म देने वाला, इनके गल कम्बल नहीं होता। इनका गोबर पतला होने के कारण कृषि खाद के लिए उपयोगी नहीं होता। इनका गौमूत्र भी गुणहीन होता है। इनका शरीर स्थूल होता है तथा इनकी आवाज कर्कश होती है। यह धूप सहन नहीं कर सकती है। खूब चारा खाती है और जल्दी बीमार हो जाती है। इनका दूध सुपाच्य भी नहीं होता। इसके ए–१ प्रोटीन वाले दूधपर पलने वाले बच्चों में पाचन क्रिया सम्बन्धी रोग बढ़ सकते हैं। ऐसे बच्चों में कब्ज की शिकायत ज्यादा रहती है। उपरोक्त तथ्यों से सिद्ध होता है कि ए–२ प्रोटीन वाली देशी गाय माता का दूध ही मानव शरीर के लिए सर्वोत्तम आहार है। जो पौष्टिकता देने के साथ–साथ बीमारियों से भी बचाता है। अतः हमारी गौ मेाता को बचाना हमारा धर्म तथा दायित्व है।

हमारे हिन्दू सनातन धर्म में गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्तिम संस्कार तक सभी में गौप्रदत्त पदार्थ और गोदान की आवश्यकता होती है। सनातन धर्म में मान्यता है कि मृत्यु के उपरान्त अगले जन्म के लिए वैतरणी नदी पार करनी पड़ती है, उसे गाय माता की पूंछ पकड़कर ही पार किया जा सकता है। इससे समझा जा सकता है कि न केवल इहलोक वरण दूरलोक तक गौमाता के माध्यम से ही मार्ग प्रसस्थ होता है। अतः हिन्दू समाज के गाय अत्यन्त पूज्य एवं धर्म भावना से जुड़ी है। गौहत्या होने पर मन में उत्तेजना पैदा होती है। हमारी गाय माता जो अपना स्वस्थ एवं पौष्टिक दूध, दही, घृत आदि से हमारा पोषण करती है। जो अपने गोमूत्र एवं गोमय (गोबर) से दवा उपलब्ध कराकर हमें बीमारियों से बचाती है। अपने गोबर से उपजाऊ खाद तथा किसान को बैल उपलब्ध करवाकर हमारी खेती की पैदावार बढ़ाकर हमारे परिवार को आर्थिक रूप से सम्पन्न करती है। अतः किसी के जीभ के स्वाद के लिए गोहत्या करना हिन्दू समाज की भावनाओं को भड़काने वाला है। अतः सरकार को हिन्दू भावना का सम्मान करते हुए यथाशीघ्र कानून बनाकर हमारी गाय माता को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाना चाहिए।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों को अपने व्यापार में दूरदर्शिता बनायें रखने की आवश्यकता है। किसी भी योजना को बनायें परन्तु उसे गुप्त रखना अपरिहार्य है। कुछ नयें लोगों से जान–पहचान बढ़ेगी जिससे आगामी समय में ये लोग आपके काम आ सकते है।

वृष : इस सप्ताह कुछ नयें लोगों से जान–पहचान बढ़ेगी जिससे आगामी समय में ये लोग आपके काम आ सकते है। आप–अपनी सन्तान के विवाह को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे। जीवन साथी के प्रति कुछ उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते है।

मिथुन : इस सप्ताह आपका हर कदम महत्वपूर्ण है इसलिए जो भी करें सोच–समझकर ही करें तो बेहतर रहेगा। नयें सम्बन्धों के प्रति मन में उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते है। जो लोग किसी यात्रा पर जा रहें, उन्हे दूसरों के साथ मिलकर रहना ही लाभकारी रहेगा।

कर्क : इस सप्ताह घर में स्वच्छ व सुन्दर माहौल बनायें रखने के लिए, अपने अहंकारी स्वभाव पर नियन्त्रण रखें। परिवार का सुख व सहयोग मिलता रहेगा जिसके कारण आप हताश नहीं होंगे। आप–अपने जीवन साथी के साथ मधुरतम पल व्यतीत करेंगे।

सिंह : इस सप्ताह मित्रों के साथ अत्यधिक समय न बितायें अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न होने की आशंका है। ऑफिस में कई तरह के लोग होते है। सभी लोंगो के साथ सामंजस्य बनायें रखें अन्यथा सहकर्मियों के साथ खटपट हो सकती है।

कन्या : इस सप्ताह सन्तान के व्यवहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। परिवार का सुख व सहयोग मिलता रहेगा जिसके कारण आप हताश नहीं होंगे। जॉब वाली महिलायें समय का प्रबन्धन अवश्य करें अन्यथा बॉस से सहयोग की उम्मीद न करें।

तुला : इस सप्ताह कुछ लोगों के परिवार में दुख दर्द से भरा माहौल रहने की आशंका है। धन से सम्बन्धित लम्बित मामलों में प्रगति होने के आसार है। आर्थिक मामलों में सावधानी अपेक्षित है अन्यथा समस्याओं से घिर सकते हैं।

वृश्चिक : घर की समस्याओं को आपसी बातचीत से ही हल किया जा सकता है। परिवार के सभी सदस्यों के साथ प्रेम पूर्वक भोजन ग्रहण करें, जिससे आपसी मतभेद दूर हो सकता है। वृद्ध व्यक्ति अपनी दिनचर्या अत्यधिक व्यस्त रखने का प्रयास करें तभी मन शान्त रहेगा।

धनु : इस सप्ताह रोजी व रोजगार के नयें अवसार प्राप्त होंगे। पिछले दिनों में आपके द्वारा किया परिश्रम जाया नहीं जायेगा। परिवार के सदस्यों के साथ थोड़ी तीखी झड़प होने के आसार है। छात्रों के लिए उचित समय है, अतः अवसरों का लाभ अठाने में कोई कोताही न बरतें।

मकर : जीवन परमात्मा है, आपको जिन्दगी की धारा के साथ होने की जरूरत है। आप किसी भी चीज को जीतने का भाव छोड़े क्योंकि बिना होश के कुछ भी जीता हुआ हार के समान है। नवयुवकों को अत्यधिक परिश्रम करने पर ही धन की प्राप्ति होगी।

कुम्भ : इस सप्ताह आपको–अपने कार्यो में चुनौतियों के लिए तैयार रहना होगा। घर–गृहस्थी की समस्यायें आपको घेरे रहेंगी। जिससे आपका मानसिक सन्तुलन बिगड़ सकता है। किसी से मुकाबला न करके स्वंय को मजबूत करने का दृष्टिकोण अपनायें।

मीन : इस सप्ताह आप शान्त बनें रहने के कारण आप सम्बन्धों एंव सम्पत्ति के मामलें में भाग्यशाली रहेंगे। कुछ गुप्त विरोधी आपके सामने समस्यायें खड़ी कर सकते है। माता का स्वास्थ्य खराब होने की आशंका है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तत्रासदुच्यते।।

जो जाननेयोग्य है तथा जिसको जानकर मनुष्य परमानन्द को प्राप्त होता है उसको भलीभाँति कहूँगा। वह अनादिवाला परमब्रह्म न सत् ही कहा जाता है, न असत् ही।।१२।।

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लो के सर्वमावृत्य तिष्ठति।।

वह सब ओर हाथ–पैरवाला, सब ओर नेत्र, सिर और मुखवाला तथा सब ओर कानवाला है, क्योंकि वह संसार में सबको व्याप्त करके स्थित है।।१३।।

सवेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च।।

वह सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषयों को जानने वाला है, परन्तु वास्तव में सब इन्द्रियों से रहित है तथा आसक्तिरहित होने पर भी सबका धारण–पोषण करने वाला और निर्गुण होने पर भी गुणों को भोगने वाला है।।१४।।

बहिरन्तश्रच भूतानामचरं चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्।।

वह चराचर सब भूतों के बाहर–भीतर परिपर्ण है और चर–अचर भी वही है। और वह सूक्ष्म होने से अविज्ञेय है तथा अति समीप में और दूर में भी स्थित वही है।।१५।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 15 नवम्बर से 21 नवम्बर 2017 तक

अध्यक्षीय

कश्मीर को सीरिया बनाने की तैयारी!

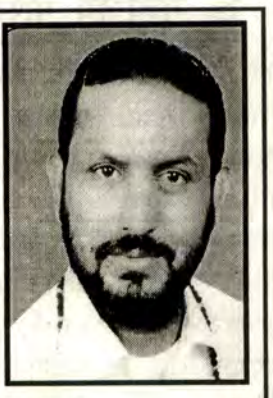

यह एक बुरी खबर हो सकती है कि कश्मीर भारत का सीरिया बनने की ओर अग्रसर है। इस आशंका को अब कश्मीर में शांति लाने के लिए कोशिशें करने के लिए नवनियुक्त वार्ताकार दिनेश्वर शर्मा भी प्रकट कर चुके हैं। जबकि केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा राज्य सरकार को मिली चेतावनियों में कहा गया है कि आतंकी आने वाले दिनों में भयानक तबाही मचा सकते हैं। ऐसी चेतावनियों के पीछे तर्क यह दिया जा रहा है कि सीरिया में रूसी और अमेरीकी फौजों के हाथों पिटने के बाद आईएस के आतंकी अब कश्मीर की ओर मुड़ सकते हैं और कश्मीर के हालात में नया आयाम भी आ सकता है। फिलहाल इस शंका से इंकार नहीं किया जा रहा कि आईएस का रूख पूरी तरह से कश्मीर की ओर हो सकता है। ऐसी शंका के पीछे तर्क दिया जा रहा है कि पाकिस्तान की खुफिया संस्था आईएसआई इन आतंकियों का इस्तेमाल अब कश्मीर में करना चाहेगी। ताजा घटनाक्रम के उपरांत कोई आईएस आतंकी कश्मीर में प्रवेश पाने में कामयाब रहा है या नहीं, अधिकारी इस बारे में सुनिश्चित नहीं हैं। परंतु उनके आने की संभावनाओं से वे इंकार नहीं करते। यही कारण है कि सीमाओं पर चौकसी को कड़ा किया गया है तथा सुरक्षा प्रबंधों को और मजबूत बनाया जा रहा है। इस संबंध में केंद्रीय गृह मंत्रालय की चेतावनियां भी आनी आरंभ हो गई हैं। इन चेतावनियों के बकौल आईएस के आतंकियों के कदम कश्मीर की ओर मुड़ सकते हैं। अगर ऐसा हुआ तो कश्मीर में भयानक तबाही का मंजर होगा और परिस्थितियां नया रूख धारण कर लेंगी। ऐसी चेतावनियों को हल्के ढंग से भी नहीं लिया जा रहा है। उनके प्रति गंभीरता दिखाई जा रही है क्योंकि मामला ही इतना गंभीर है कि पहले से ही विदेशी आतंकियों से जूझ रहे सुरक्षा बलों के लिए आईएस चिंता का विषय इसलिए भी बन गए हैं क्योंकि वे जानते हैं कि कश्मीर में आईएस का प्रवेश पहले से सक्रिय आतंकियों के लिए नया संचार और मृतप्राय हो रहे आतंकवाद में नई जान फूंकने वाला होगा। इन चेतावनियों पर अमल भी हो रहा है। सुरक्षा प्रबंधों को ऐसा बनाया जा रहा है कि आतंकवादी उसे भेद न सकें। परंतु चौंकाने वाली बात यह है कि साथ ही में सुरक्षाधिकारी आप यह भी कहते हैं अगर कोई आत्महत्या के इरादे से आत्मघाती हमला कर ही दे तो रोकना संभव नहीं होता। अर्थात अधिकारियों को अपने सुरक्षा प्रबंधों पर शक तो नहीं है परंतु आत्मघाती या फिर फिदायीन हमलों की परिस्थिति में वे हाथ खड़े कर देने की बातें कर रहे हैं। गौरतलब यह है कि आतंकी अभी भी आत्मघाती तथा फिदायीन हमलों को ही अंजाम दे रहे हैं। आईएस के आतंकियों के कहर से निपटने की खातिर किए जा रहे प्रबंधों का खुलासा तो नहीं किया जा रहा परंतु उनके फूल प्रूफ होने का दावा अवश्य है। प्रबंध कहां तक आत्मघाती हमलों के समक्ष टिक पाएंगे यह तो समय ही बताएगा लेकिन इतना अवश्य है कि आईएस के भूत से सुरक्षाधिकारी अवश्य त्रस्त हो गए हैं जिनकी दहशत में अब केंद्रीय गृह मंत्रालय की चेतावनियां अपनी अहम भूमिका निभा रही हैं। तालिबान तथा अल कायदा द्वारा संचालित दो आतंकवादी संगठनों जैश–ए–मुहम्मद तथा लश्करे तौयबा की गतिविधियों से पहले से ही सुरक्षा बल परेशानी में हैं और अब आईएस के सीधे कश्मीर की जंग में कूद जाने के समाचार उनके हौसलों को पस्त अवश्य करने लगे हैं। हालांकि कुछेक अधिकारियों का मानना है कि जैश–ए–मुहम्मद और लश्करे तौयबा के रूप में तालिबानी लड़कों से वह पहले से ही निपट रहे हैं जिन्हें अल कायदा ने ट्रेनिंग दी है। वे कहते हैं कि आईएस का मात्र हौव्वा ही बनाया जा रहा है जबकि वे इतना विश्वास अवश्य दिलाते हैं कि आईएस का भी वही हाल होगा जो अन्य आतंकवादी गुटों का कश्मीर में हो रहा है। वे कहते हैं कि भारतीय जवानों की बहादुरी पर शक नहीं किया जाना चाहिए। यह भी है कि कश्मीर के सीरिया बन जाने की खबरों से कश्मीरी सबसे ज्यादा डरे हुए हैं।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

अब राजनीतिक जमीन पर भी चलेगा झाड़ू

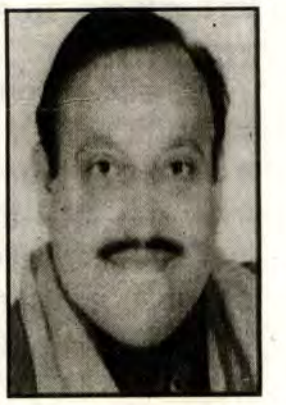

राजनीति का अपराधीकरण रोकने के लिए एक अहम बात सुप्रीम कोर्ट ने कही है कि दागी नेताओं के मुकदमों के जल्द निपटारे के लिए विशेष अदालतें बनें और उनमें केवल नेताओं के मुकदमे ही सुने जाएं। सुप्रीम कोर्ट ने विशेष अदालतें गठित करने पर छह सप्ताह में सरकार को योजना पेश करने को कहा है। भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति में अपराधीकरण लंबे समय से चिंता का विषय रहा है। लोकतंत्र में चुनावी मैदान में उतरने और वोट देने का हक नागरिकों को हासिल है। बिना किसी भेदभाव के सबको समान अवसर मिले, ऐसी भावना इन अधिकारों के पीछे है। लेकिन बीते कुछ बरसों में यह प्रवृत्ति देखी गई कि जेल की सलाखों के पीछे से कोई चुनाव लड़ रहा है, तो कोई सजा काटकर चुनावी मैदान में उतरा है। किसी पर गंभीर आरोप हैं, लेकिन वह संसद या विधानसभा का सदस्य बना है। इन सबको राजनीति में आई गिरावट से जोड़ा गया, नैतिकता, शुचिता की दुहाइयां दी गई। हमने अपराधीकरण के कड़वे फल को तो देख लिया लेकिन यह नहीं देखा कि इसके बीज कहां रोपे गए हैं। यह बात अब हमें बहुत मामूली लगती है कि बड़े–बड़े नेताओं से लेकर छुटपया नेताओं के आसपास चमचों की फौज होती है, उनके अपने लाठीधारी, बंदूकधारी गुंडे होते हैं, जो विपक्षी दलों के गुंडों से लडने का काम करते हैं। कई बार इन गुंडों को पालने में पूंजीपतियों का सहयोग भी रहता है। बाहुबल, धनबल और सत्ता का बल इन तीनों के मेल से राजनीति में लगातार गिरावट आई है। पूंजीपतियों ने पूंजी के दम पर राज्यसभा, विधानपरिषद आदि के दरवाजे अपने लिए खुलवाए, तो भला बाहुबली पीछे क्यों रहें। उन्होंने भी नेताओं की मदद के बजाए खुद ही सत्ता के अखाड़े में कूदने का रास्ता अपनाया। अब जो परिदृश्य है, वह हमारे सामने है। संसद और विधानसभाओं में १५ सौ से अधिक दागी नेता हैं, जिनके कारण राजनीति के शुद्ध चरित्र पर संदेह होना लाजिमी है। लूट, हत्या, बलात्कार, दंगे–फसाद, भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपी या दोषी संसद, विधानसभाओं में पहुंचने लगे तो आम जनजीवन में भी कानून के लिए इज्जत कम होने लगी। नियमों का उल्लंघन, कानून तोड़ना साधारण व्यवहार में शामिल होने लगा। राजनीति में अपराध की यह गंदगी पानी में तैरती काई के समान खटकने लगी है। इसलिए समय–समय पर यह सवाल उठाया जाता है कि क्यों न अपराध के आरोपी या दोषियों को राजनीति से ही दूर कर दिया जाए। न्यायमूर्ति रंजन गोगोई और न्यायमूर्ति नवीन सिन्हा की पीठ ने विशेष अदालत बनाने के लिए कहा साथ ही चुनाव लड़ते समय नामांकन में आपराधिक मुकदमे का ब्योरा देने वाले १५८१ विधायकों और सांसदों के मुकदमों का ब्योरा और स्थिति भी पूछी है। राजनीति को साफ–सुथरा बनाए रखने के लिए सख्त कदम उठाना जरूरी है। लेकिन इसमें यह ख्याल भी रखना होगा कि कहीं उससे नागरिक अधिकारों का उल्लंघन ही न हो जाए। हत्या, दंगे, बलात्कार जैसे जघन्य अपराध के दोषियों को तो बेशक जनप्रतिनिधि बनने से रोका जाना चाहिए, लेकिन कई बार साजिशन किसी को अपराध में फंसा दिया जाता है। राजनीतिक दुश्मनी के कारण झूठे मुकदमे चला कर सजायाता भी बना दिया जाता है। ऐसे में उनके चुनाव लड़ने पर रोक लगाना क्या सही होगा, इस पर विचार करना चाहिए। मुकदमों के जल्दी निपटारे के लिए विशेष अदालतों को बना भी दिया गया, तो उन्हें राजनीतिक प्रभाव या पूर्वाग्रहों से दूर रखने की चुनौती बनी रहेगी। क्या विशेष अदालत का फैसला ही अंतिम होगा या इसमें भी सर्वोच्च अदालत तक जाने का प्रावधान रहेगा। अगर विशेष अदालत में दोषी पाए जाने के बाद सुप्रीम कोर्ट से बरी होते हैं, तब भी क्या चुनाव लड़ने पर रोक रहेगी। ऐसे कुछ सवालों, संदेहों के जवाब ढूंढने से ही राजनीति का सफाई अभियान अच्छे से चल पाएगा।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

गर्मी के मौसम में अमृत है छाछ

✍ मृत्युंजय भारती

गुणों से भरी छाछ को गर्मी के लिए तो अमृत तुल्य कहा गया है। पाचन मजबूत करने के साथ–साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली छाछ इस मौसम में जरूर पिएं।

गर्मियों से राहत देने के अलावा छाछ औषधि के रूप में भी काम करती है। दिन में यदि दो बार छाछ पी ले तो इससे सेहत ठीक रहती है और वजन घटाने में भी मदद मिलती है। डॉक्टरों के मुताबिक छाछ एक प्राकृतिक ड्रिंक है, जिसे पीने से फायदे तो अनेक हैं, नुकसान कोई नहीं। ऐसे लोग जिनका पाचन तंत्र मजबूत नहीं हैं उन्हें दूध की जगह छाछ का इस्तेमाल करना चाहिए। डॉक्टर मोनिका सुद के मुताबिक छाछ प्रोबायोटिक आहार होता है। इनमें सुक्ष्मजीव होते हैं, जो हमारी आंतो को सक्रिय रखते हैं। इनकी सहायता से पाचन में सुधार होता है। इसके अलावा ये प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने और पोषक तत्वों के निर्माण व हृदय रोगों से रक्षा में मदद करते हैं। छाछ की खास बात यह है कि इसमें वसा नहीं होती, क्योंकि इसमें से मक्खन पहले ही निकाल लिया जाता है।

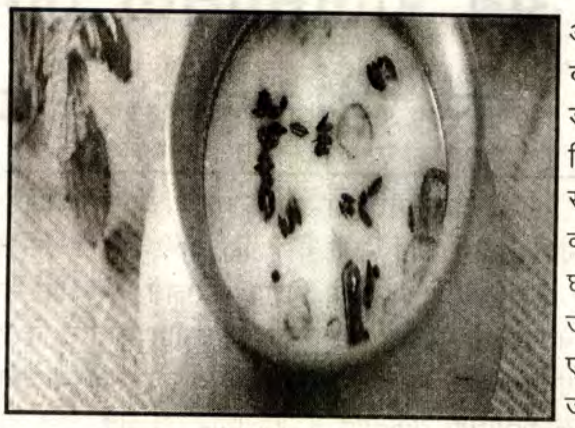

छाछ पोटैशियम, विटामिन बी १२, कैल्शियम और रिबोफ्लेविन के अलावा फास्फोरस का भी अच्छा स्त्रोत है, जो भोजन को झटपट पचाने में मदद करता है। डॉक्टरों के अनुसार घरेलू नुस्खों में भी छाछ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं अगर अधिक जी मिचलाता हो तथा अजीर्ण, ज्वर, दुर्बलता व पेट में मंद–मंद दर्द हो तो घर के लोग तुरंत छाछ पीने की सलाह देते हैं। अध्ययनों के मुताबिक यदि दिन में एक से दो बार भूना हुआ जीरा, थोड़ा नमक और पिसी हुई काली मिर्च डालकर छाछ पिएं तो एक सप्ताह में पेट के कीड़ों से छूटकारा मिल जाएगा।

एसिड की जरूरी मात्रा मिलाई जाती है। त्वचा को चमकाने, नरम बनाने और डेड स्किन को हटाने के लिए भी कई बार डॉक्टर इसका इस्तेमाल फेशियल पील्स के तौर पर करते हैं। बहुत ज्यादा एसिडिक होने के चलते छाछ एस्ट्रिंजेंट की तरह काम करता है। इसके चेहरे के दाग– धब्बे, झुर्रियों आदि परेशानियों से राहत मिल सकती है। इसलिए छाछ से फेस पैक भी बनाया जा सकता है। आपको छाछ का स्वाद पसंद नहीं है तो आप उसे चेहरे पर लगाकर अपनी त्वचा चमका सकते हैं। बाजार में छाछ का पाउडर भी मिलता है।

औषधि के रूप में कैल्शियम

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिन के मुताबिक प्रत्येक व्यक्ति को हर दिन, १,००० से १,२०० एमजी कैल्शियम लेना चाहिए। ६ से १३ साल के बच्चों के लिए यह मात्रा, १,३०० एमजी बताई गई है। यूएसडीए नेशनल न्यूट्रिएंट डाटाबेस के आंकड़ों के मुताबिक एक कप छाछ में २८१ एमजी कैल्शियम होता है, जबकि एक कप दूध में २९६ एमजी। यदि आपके बच्चे को दूध पीना पसंद नहीं है तो उसे छाछ दे सकते हैं।

प्रोटीन

छाछ और दूध में लगभग एक समान ही प्रोटीन की मात्रा पाई जाती है। छाछ में ८.११ एमजी प्रोटीन है जबकि दूध में ८.२६ एमजी।

विटामिन और खनिज की मात्रा

यूएसडीए नेशनल न्यूट्रिएंट डाटाबेस के मुताबिक छाछ में विटामिन ए, विटामिन सी और विटामिन बी की भरपूर मात्रा पाई जाती है। इसके साथ ही छाछ में आयरन, मैग्नीशियम, फास्फोरस, पोटैशियम, जिंक आदि खनिज पदार्थ भी पाए जाते हैं।

ऐसे में छाछ से बचें

यदि आप जुकाम या खांसी की समस्या से गुजर रहे हैं तो छाछ से नजर अंदाज करना चाहिए इसके अलावा जरूरत से ज्यादा छाछ का सेवन भी नुकसान दायक हो सकता है।

रोग हमारा मित्र है शत्रु नहीं

अधिकांश रोगों के कारण हम स्वयं ही होते हैं। रोग के सम्बन्ध में हमारी गलत धारणाएँ हैं। दर्द अथवा रोग के अन्य लक्षण हमें सजग करते हैं। अपने कर्तव्य बोध हेतु चिन्तन करने की प्रेरणा देते हैं। हमें चेतावनी देते हैं कि हम अपने आपका निरीक्षण कर, अपने आपको बदलें ताकि पीड़ा मुक्त, तनाव मुक्त जीवन जी सकें। हम स्वप्न में जी रहे हैं यानी बेहोशी में हैं। दर्द अथवा रोग के अन्य संकेत उस बेहोशी को भंग कर हमें सावधान करते हैं परन्तु सही दृष्टि न होने से हमने, उनको शत्रु मान लिया है। रोगी शरीर की आवाज सुनना और भाषा को समझना नहीं चाहता। उपचार स्वयं के पास है और खोजता है बाजार में, डॉक्टर और दवाइयों के द्वारा। फलतः दवा द्वारा रोग के कारणों को दबा कर खुश का असफल प्रयास करता है। रोगी जितना डॉक्टर, दवा अथवा अन्य शुभचिन्तकों, अधूरे ज्ञान वाले सलाहकारों पर विश्वास करता है, उतना अपने आप पर एवं अपनी क्षमताओं पर विश्वास नहीं करता। यही तो सबसे बड़ा मिथ्यात्व (गलत मान्यता) है। जब रोग का कारण स्वयं है तो उपचार भी स्वयं के पास अवश्य होना चाहिए। शरीर की स्वचलित प्रणाली आंतें, गुर्दे, फेफड़े और त्वचा शरीर के किसी भी भाग में एकत्र हुए अनुपयोगी, विजातीय अथवा अवांछित तत्त्वों को किसी न किसी प्रकार का सफाई अभियान चलाकर, उसे जुकाम, बुखार, फोड़े–फुंसी, मल–मूत्र अथवा पसीने आदि के रूप में शरीर से बाहर फेंक कर शरीर की विभिन्न कार्य प्रणालियों के कार्य को सामान्य रूप में लाने का प्रयास करती है। प्रकृति रोग के द्वारा यह दर्शाती है कि हम गलती कर रहे हैं। प्रारम्भिक अवस्था में प्रकट होने वाले रोग के लक्षण हमारे मित्र होते हैं। हमें हमारी असजगता के कारण भविष्य में होने वाले दुष्परिणामों की चेतावनी देकर करते हैं। यह तो हमारे शारीरिक प्रक्रिया का एक उपकारी एवं हितैषी कार्य है, जिसमें हमें सहयोग करना चाहिए। यह कोई शत्रुता पूर्ण कार्य नहीं जिसे रोका जाए, विरोध किया जाए अथवा जिसे नष्ट किया जाए। परन्तु अज्ञानवश आज हम इन संकेतों को दुश्मन मान दवाइयों द्वारा उनको दबा कर अपने आपको बुद्धिमान समझने की भूल कर रहे हैं। कचरे को दबाकर अथवा छिपाकर रखने से उसमें अधिक सड़ांध, बदबू अथवा अवरोध की समस्या ही पैदा होगी। दीमक लगी लकड़ी पर रंग रोगन करने से बाहरी चमक भले ही आ जावे, परन्तु मजबूती नहीं आ सकती। औषधियों के माध्यम से इस सफाई अभियान को रोकने से तो विषैले अथवा दूषित तत्त्वों के शरीर के अन्दर रुके रहने से धीरे–धीरे शरीर की कार्यप्रणाली में अवरोध बढ़ता जाएगा। जो भविष्य में विभिन्न गम्भीर रोगों को जन्म देने का कारण बनते हैं। अधिकांश मौसमी एवं वायरस रोगों का यही प्रमुख कारण होता है। वे चाहे मलेरिया, चेचक, चिकनगुनिया, डेंगू, प्लेग, इबेलो, एन्थ्रेक्स, स्वाइन फ्लू आदि किसी भी नाम से पुकारे जाते हों। दवाओं द्वारा लक्षणों को दबा देने से एक तरफ तो रोग के कारण बने रहते हैं, दूसरी तरफ दवाएँ प्रायः शरीर की रोग प्रतिकारात्मक क्षमताओं को क्षीण कर देती हैं। परिणामस्वरूप भविष्य में नित्य नवीन रोगों के पनपने की संभावनाएँ बनी रहती हैं।

गर्म पानी नींबू के सेवन से कैंसर का खतरा कम

नींबू के गुणों से आमतौर पर सभी लोग परिचित हैं। लेकिन इसमें कैंसररोधी गुण भी हैं। गर्म पानी के साथ नींबू के रस को

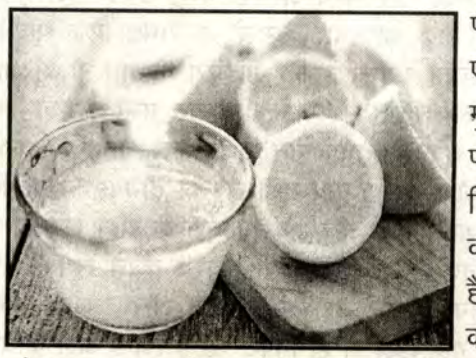

पीने के कई फायदे हैं। एक अध्ययन के मुताबिक, नींबू में फ्लेवोनोइड्स और विटामिन सी के रूप में काफी ऑक्सीडेंट होते हैं जो शरीर को अनचाहे कणों से मुक्त करते हैं और इस तरह कैंसर होने के खतरे को कम करते हैं। गर्म पानी के साथ नींबू के प्रयोग से और भी फायदे हैं। किडनी खून को करीब पीएच ७.४ तक रहने को नियंत्रित करता है लेकिन उसके इस भार को नींबू पानी से कम किया जा सकता है। इसके अलावा इससे त्वचा के नुकसान को रोकने, वजन कम करने, पाचन क्रिया ठीक करने, शरीर को ऊर्जा देने में भी मदद मिलती है।

राजेश गुप्ता

गुरु गुणों की खान

कृष्णचन्द्र टवाणी

मोह भ्रमित मन को अध्यात्म की पावन पयस्विनी से धन्य बनाने वाला सदगुरु ही होता है। यह शरीरधारी होकर भी अशरीरी होता है। सदगुरु को इस संसार को स्वप्नवत् मानते हुए भी इसमें रहना पड़ता और लोक हितकारी कार्य करना पड़ता है। सत्य तो यह है कि सदगुरु के आसन पर मनुष्य नहीं ईश्वर स्वयं विराजमान रहता है। उसकी महिमा अनंत है। कबीर साहब ने कहा—

सद्गुरु की महिमा अनंत
अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़ियाँ अनंत
दिखावणहार।।

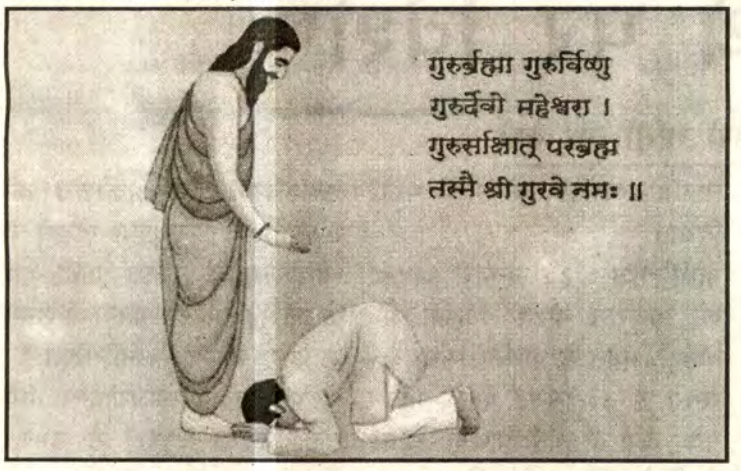

सद्गुरु हमारा सबसे बड़ा हित चिंतक होता है। सद्गुरु ही लोक परलोक दोनों की शिक्षा देकर शिष्य का लौकिक व पारलौकिक जीवन सफल बना देते हैं।

सद्गुरु कौन? : "गु" अक्षर माया, अविद्या, अंधकारादि गुणों का भासक है तथा "रु" अक्षर इस तिमिराधंकार को समूल नष्ट करने वाले परब्रह्म का द्योतक है। संक्षेप में गुरु शब्द गु+रु से बना है जिसका अर्थ क्रमशः "अंधकार" और "दूर करने वाला है" अज्ञानान्धकार में भ्रमित मानव को सत्यपथ दिखाने वाला एवं जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सम्यक मार्गदर्शन करने वाला गुरु ही है। यूनान के विद्वान अरस्तु एक महान दार्शनिक थे, लेकिन शिष्यों को अनेक बार अपनी बातें वे अत्यंत सहज और विनोदपूर्ण ढंग से समझाते थे। एक बार सुकरात से किसी ने पूछा—"आपके गुरु कौन हैं?" सुकरात ने हँसते हुए उत्तर दिया—"तुम मेरे गुरु के संबंध में जानना चाहते हो तो सुनो दुनियाभर के जितने मूर्ख हैं, वह सब मेरे गुरु हैं।" उस व्यक्ति ने पूछा—"मूर्ख आपके गुरु कैसे हो सकते हैं?"

सुकरात ने स्पष्ट किया, "मैं यह देखने की कोशिश करता हूँ कि किसी व्यक्ति को किस दोष के कारण मूर्ख कहा जा रहा है। यदि वह दोष मेरे अंदर भी होता है तो उससे शिक्षा लेकर मैं अपने अंदर के दोषों को दूर कर लेता हूँ ताकि मैं मूर्ख न कहा जाऊँ। इस तरह मैंने जो ज्ञान प्राप्त किया है, उन्हीं से शिक्षा लेकर प्राप्त किया है। अब तुम्हीं बताओ कि मूर्ख ही मेरे वास्तविक गुरु हुए कि नहीं?"

गुरु का परिचय देना सूर्य को दीपक दिखलाने जैसा है। गुरु के मुखारविंद से निकले हुए शब्द समूह जब एक स्थान पर एकत्रित होते हैं तो प्रकाश पुंज बन जाते हैं। गुरु की वाणी समस्त संशय व भ्रम का निवारण करती है। गुरु के गुणों का वर्णन करना अत्यंत दुष्क कार्य है। कबीर के शब्दों में बस इतना ही कहना उचित होगा कि—

सब धरती कागज करूँ लेखनी
सब वनराय।
सप्त सिंधु की मसि करूँ गुरु
गुन लिखा न जाय।।

गुरु कृपा पात्र कौन? : गुरु के वचनों का मन, वचन व कर्म तीनों से पालन करने वाला शिष्य ही गुरु की कृपा का पात्र होता है। उसके मन में नित्य यह भावना होना चाहिए—

ध्यान मूलं गुरोर्मूति पूजा मूलं
गुर्रोपदम्।
मंत्र मूलं गुर्रोवाक्यम्, मोक्ष
मूलं गुर्रोकृपा।।

अर्थात् ध्यान का मूल गुरु की मूर्ति है, पूजा का मूल गुरु के चरण हैं, मंत्र का मूल गुरु के वाक्य हैं। जब तक शिष्य गुरु की परीक्षा में खरा नहीं उतरता तब तक गुरु कृपा प्राप्त नहीं होती। सच्चे शिष्य में दृढ़ता होती है। एक बार जिसे गुरु बना लेता है तो वह श्रद्धा एवं पूर्ण मनोयोग से गुरु की सेवा में समर्पित हो जाता है। जब शिष्य के हृदय में सच्ची सेवा व लगन होगी तभी सदगुरु चरण रज प्राप्त होती है। शिष्य जिस दिन सदगुरु की चरण रज को पा लेता है तो उसके भव त्रास समाप्त हो जाते हैं। कबीरदास जी ने कहा है—

यह जग दुख की बेलरी, गुरु
सुखों की खान।
गुरु कृपा जब होय, तो मिट
जाये भव की त्रास।।

शिष्य के लिए गुरु ही सच्चा हितैषी होता है। जब शिष्य गुरु चरणों में पूर्ण रूप से समर्पित होकर उसकी आज्ञा का पालन करता है तब गुरु कृपा से अपने आप ही संसार के सारे कड़वे फल दूर भाग जायेंगे। फिर ये जग दुःखों की बेल नहीं रहेगी। सच्चा सुख मिलेगा, जीवन धन्य हो जाएगा।

गुरु शिष्य परंपरा : भारत की गुरु परम्परा एक आदर्श परम्परा है। इस परम्परा में गुरु पहले शिष्यों को ज्ञान प्रदान करते हैं। उसके बाद जिस शिष्य का आचरण तथा बुद्धि श्रेष्ठ होती है गुरु उसे अपना उत्तराधिकारी बनाता है। वही अपने गुरु की धार्मिक नीति परम्परा को आगे चलाता है। जब गुरु ब्रह्मलीन हो जाता है वही शिष्य गुरु का आसन ग्रहण करता है। इस प्रकार एक ज्योति बुझने के बाद दूसरी ज्योति जल जाती है। हजारों वर्षों से यही गुरु परम्परा अखंडित रूप से चली आ रही है।

गुरु–शिष्य की इस अद्भुत परंपरा के प्रामाणिक उल्लेख दुनिया के सबसे पुराने ग्रंथ "ऋग्वेद" में उपलब्ध हैं। इसके मंडल एक के १७० वें सूक्त में देवराज इन्द्र और भगवान अगस्त्य का अध्यात्म विद्या सम्बन्धी संवाद इसका प्रमाण है। अथर्ववेद में तो तत्ववेत्ता ऋषि के लिए सीधे "आचार्य" संबोधन का उल्लेख है। कठोर तप, स्वाध्याय और त्याग से प्राप्त ज्ञान के अमृत को बिना किसी प्रलोभन, भय, अहंकार और आकांक्षा के सुपात्र (सुयोग्य शिष्य को) सहर्ष दान कर देने की इस परम्परा का कोई साम्य या समानांतर नहीं मिलता। भारत की इस दैदीप्यमान परंपरा में जगद्गुरु भगवान शंकर से लेकर वशिष्ठ, विश्वामित्र, घोर आंगरिस, बृहस्पति, शुक्राचार्य, नारद, सांडिल्य, सनत्कुमार, याज्ञवल्क्य, भारद्वाज, वामदेव, जाबालि–पिप्पलाद, अत्रि, दत्तात्रेय, अष्टावक्र, संदीपनि, पाराशर, जैमिनी, कणाद, पतंजलि, गुत्समद, आद्यशंकर, माध्वाचार्य, निम्बाकाचार्य, वल्लभाचार्य, तुलसी, कबीर, चैतन्य महाप्रभु, परमहंस रामकृष्ण देव, महर्षि रमन, जे. कृष्णमूर्ति, ओशो रजनीश, भक्ति वेदांत अभयचरणजी, अरविंद, विवेकानंद ऐसे अनगिनत नाम हैं, जो भारत के आध्यात्मिक आकाश के प्रकाश पुंज हैं। सत्यवती नंदन भगवान वेदव्यास उनकी अलौकिक कृति जय या महाभारत को पाँचवे वेद का सम्मान तो है ही उसके विराट स्वरूप, विषयवस्तु, कथानक के बारे में तो यहाँ तक कहा गया कि—"यत्र भारते तत्र भारते" अर्थात जो महाभारत में नहीं है वह कहीं नहीं है। भारतीय परंपरा में गुरु की पारसमणि से तुलना की गई है। किंतु जिन लोगों ने और गहरे जाकर इस परंपरा का अध्ययन किया है वे तो इससे भी सहमत नहीं है क्योंकि पारस लोहे को सोना तो कर सकता है पर पारस नहीं कर सकता। जबकि सद्गुरु अपनी सभी विद्या सिद्धियाँ, युक्तियाँ, सामर्थ्य पात्र शिष्य को देकर, उसका आभ्यांतर परिमार्जन कर उसे "सद्गुरु ही बना देता है।"

सद्गुरु की महिमा : सद्गुरु की महिमा अनंत है। गुरु देव हैं, जो अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश सर्वत्र दूर तक फैलाते हैं। मानव हमेशा जिज्ञासु होता है, ज्ञान के प्रति अतृप्त होने से सतत् प्रयासरत रहा है। गुरु हमेशा नवीनतम शोध करते हुए हमें ज्ञान के नए रहस्यों से परिचित कराते हैं। सच तो यह है कि ज्ञान प्राप्ति का कोई अंत ही नहीं है। "ज्ञान–यात्रा" में मानव रात–दिन सतत् प्रयत्नशील रहता है। इसका उद्देश्य (लक्ष्य) यह भी है कि जीवन में "समाधान" एवं "मन की शांति" के साथ "सार्थकता" का अनुभव हो।

सद्गुरु हमें अध्यात्म के मार्ग पर हमारी उंगली पकड़कर चलना सिखाते हैं और "आत्मज्ञान" कैसे प्राप्त किया जाए इसकी विधि बताते हैं। जब अध्यात्म अनुभूति होती है तब वे "चिदानंद स्वरूप" के रूप में अनुभव होते हैं, सद्गुरु ही परम गुरु है। सद्गुरु, विराट अनंत "शक्ति स्रोत" है। इस महान स्रोत की स्मृति कराने वाला उत्सव यानी "गुरु पूर्णिमा" है। इस दिन गुरु चरणों की पूजा करके उनकी वंदना अर्चना श्रद्धापूर्वक की जाती है।

मंगलम् गुरुदेवाय, मंगलम्
ज्ञानदायिने।
मंगलम् मोक्ष प्रदाय, मंगलम्
सत्यप्रकाशने।।

जब धर्म हारा, पाप जीता

सीता ने कुपात्र को दान दिया
ग्रहस्थ धर्म का निर्वाह किया
लक्ष्मण रेखा की अनदेखी की
यह भूल काफी महँगी पड़ी
मृग–माया रहस्य समझ में नहीं आया
सीता ने मृग–प्राप्ति का हठ किया
सीता के जिद के आगे
भगवान राम ने हार मान ली
और हिरण का शिकार करने की
मन में पक्की ठान ली
असुर रावण ने कपट किया
और सीता का हरण हुआ
यूं धर्म हारा, पाप जीता
सीता का विवेक जगा होता
तो नतीजा कुछ और होता
घटनाएं घटना, प्रभु की इच्छा है
पर जग के लिए ये शिक्षा है
धर्म पालन में विवेक जरुरी है
विवेक के अभाव में
शिक्षा "हरि" अधूरी है

१५ नवम्बर नाथूराम विनायक गोडसे की पुण्यतिथि पर विशेष

संदर्भ गोपाल गोडसे गांधी वध क्यों

नाथूराम विनायक गोडसे (जन्म १६ मई १९१० – मृत्यु १५ नवम्बर १९४९) एक पत्रकार, हिन्दू राष्ट्रवादी थे। इनका सबसे अधिक चर्चित कार्य मोहनदास करमचन्द गांधी उपाख्य महात्मा गांधी की हत्या था क्योंकि भारत के विभाजन और उस समय हुई साम्प्रदायिक हिंसा में लाखों हिन्दुओं की हत्या के लिये लोगबाग गांधी को ही उत्तरदायी मानते थे। यद्यपि वे अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवम् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी जुड़े रहे, परन्तु बाद में वे अखिल भारतीय हिन्दू महासभा में चले गये।

प्रारम्भिक जीवन : नाथूराम गोडसे का जन्म १६ मई १९१० को भारत के महाराष्ट्र राज्य में पुणे के निकट बारामती नामक स्थान पर चित्तपावन मराठी परिवार में हुआ था। इनके पिता विनायक वामनराव गोडसे पोस्ट आफिस में काम करते थे और माता लक्ष्मी गोडसे सिर्फ एक गृहणी थी। नाथूराम के जन्म का नाम रामचन्द्र था। इनके जन्म से पहले इनके माता–पिता की सन्तानों में तीन पुत्रों की अल्पकाल में ही मृत्यु हो गयी थी केवल एक पुत्री ही जीवित बची थी। इसलिये इनके माता–पिता ने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि यदि अब कोई पुत्र हुआ तो उसका पालन–पोषण लड़की की तरह किया जायेगा। इसी मान्यता के कारण इनकी नाक बचपन में ही छेद दी और नाम भी बदल दिया। बाद में ये नाथूराम विनायक गोडसे के नाम से प्रसिद्ध हुए।

बचपन : ब्राह्मण परिवार में जन्म होने के कारण इनकी बचपण से ही धार्मिक कार्यों में गहरी रुचि थी। इनके छोटे भाई गोपाल गोडसे के अनुसार ये बचपन में ध्यानावस्था में ऐसे–ऐसे विचित्र श्लोक बोलते थे जो इन्होंने कभी भी पढ़ें ही नहीं थे। ध्यानावस्था में ये अपने परिवार वालों और उनकी कुलदेवी के मध्य एक सूत्र का कार्य किया करते थे परन्तु यह सब १६ वर्ष तक की आयु तक आते–आते स्वतः समाप्त हो गया।

शिक्षा-दीक्षा : यद्यपि इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पुणे में हुई थी परन्तु हाईस्कूल के बीच में ही अपनी पढ़ाई–लिखाई छोड़ दी तथा उसके बाद कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ली। धार्मिक पुस्तकों में गहरी रुचि होने के कारण रामायण, महाभारत, गीता, पुराणों के अतिरिक्त स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, बाल गंगाधर तिलक तथा महात्मा गांधी के साहित्य का इन्होंने गहरा अध्ययन किया था।

राजनैतिक जीवन : अपने राजनैतिक जीवन के प्रारम्भिक दिनों में नाथूराम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गये। अन्त में १९३० में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी छोड़ दिया और अखिल भारतीय हिन्दू महासभा में चले गये। उन्होंने अग्रणी तथा हिन्दू राष्ट्र नामक दो समाचार–पत्रों का सम्पादन भी किया था। वे मुहम्मद अली जिन्ना की अलगाववादी विचार–धारा का विरोध करते थे। प्रारम्भ में तो उन्होंने मोहनदास करमचंद गांधी के कार्यक्रमों का समर्थन किया परन्तु बाद में गांधी के द्वारा लगातार और बार–बार हिन्दुओं के विरुद्ध भेदभाव पूर्ण नीति अपनाये जाने तथा मुस्लिम तुष्टीकरण किये जाने के कारण वे गांधी के प्रबल विरोधी हो गये।

हैदराबाद आन्दोलन : १९४० में हैदराबाद के तत्कालीन शासक निजाम ने उसके राज्य में रहने वाले हिन्दुओं पर बलात जजिया कर लगाने का निर्णय लिया जिसका हिन्दू महासभा ने विरोध करने का निर्णय लिया। हिन्दू महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष विनायक दामोदर सावरकर के आदेश पर हिन्दू महासभा के कार्यकर्ताओं का पहला जत्था नाथूराम गोडसे के नेतृत्व में हैदराबाद गया। हैदराबाद के निजाम ने इन सभी को बन्दी बना लिया और कारावास में कठोर दण्ड दिये परन्तु बाद में हारकर उसने अपना निर्णय वापस ले लिया।

भारत-विभाजन : १९४७ में भारत का विभाजन और विभाजन के समय हुई साम्प्रदायिक हिंसा ने नाथूराम को अत्यन्त उद्वेलित कर दिया। तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए बीसवीं सदी की उस सबसे बडी त्रासदी के लिये मोहनदास करमचन्द गांधी ही सर्वाधिक उत्तरदायी समझ में आये।

गांधी-हत्या की पृष्ठभूमि : विभाजन के समय हुए निर्णय के अनुसार भारत द्वारा पकिस्तान को ७५ करोड़ रुपये देने थे, जिसमें से २० करोड़ दिए जा चुके थे। उसी समय पाकिस्तान ने भारत के कश्मीर प्रान्त पर आक्रमण कर दिया जिसके कारण भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में भारत सरकार ने पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपये न देने का निर्णय किया, परन्तु भारत सरकार के इस निर्णय के विरुद्ध गांधी अनशन पर बैठ गये। गांधी के इस निर्णय से क्षुब्ध नाथूराम गोडसे और उनके कुछ साथियों ने गांधी का वध करने का निर्णय लिया।

प्रथम प्रयास विफल : गांधी के अनशन से दुखी गोडसे तथा उनके कुछ मित्रों द्वारा गांधी की हत्या योजनानुसार नई दिल्ली के बिरला हाउस पहुँचकर २० जनवरी १९४८ को मदनलाल पाहवा ने गांधी की प्रार्थना–सभा में बम फेका। योजना के अनुसार बम विस्फोट से उत्पन्न अफरा–तफरी के समय ही गांधी को मारना था परन्तु उस समय उनकी पिस्तौल ही जाम हो गयी वह एकदम न चल सकी। इस कारण नाथूराम गोडसे और उनके बाकी साथी वहाँ से भागकर पुणे वापस चले गये जबकि मदनलाल पाहवा को भीड़ ने पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया।

शस्त्र की व्यवस्था : नाथूराम गोडसे गांधी को मारने के लिये पुणे से दिल्ली वापस आये और वहाँ पर पाकिस्तान से आये हुए हिन्दू तथा सिख शरणार्थियों के शिविरों में घूम रहे थे। उसी दौरान उनको एक शरणार्थी मिला, जिससे उन्होंने एक इतालवी कम्पनी की बैराटा पिस्तौल खरीदी। नाथूराम गोडसे ने अवैध शास्त्र रखने का अपराध न्यायालय में स्वीकार भी किया था। उसी शरणार्थी शिविर में उन्होंने अपना एक छाया–चित्र (फोटो) खिंचवाया और उस चित्र को दो पत्रों के साथ अपने सहयोगी नारायण आप्टे को पुणे भेज दिया।

गांधी-हत्या : ३० जनवरी १९४८ को नाथूराम गोडसे दिल्ली के बिड़ला भवन में प्रार्थना–सभा के समय से ३० मिनट पहले पहुँच गये। जैसे ही गांधी प्रार्थना–सभा के लिये परिसर में दाखिल हुए, नाथूराम ने पहले उन्हें हाथ जोड़कर प्रणाम किया उसके बाद बिना कोई बिलम्ब किये अपनी पिस्तौल से तीन गोलियाँ मार कर गांधी का अन्त कर दिया। गोडसे ने उसके बाद भागने का कोई प्रयास नहीं किया।

हत्या अभियोग : नाथूराम गोडसे पर मोहनदास करमचन्द गांधी की हत्या के लिये अभियोग पंजाब उच्च न्यायालय में चलाया गया था। इसके अतिरिक्त उन पर १७ अन्य अभियोग भी चलाये गये। किन्तु इतिहासकारों के मतानुसार सत्ता में बैठे लोग भी गांधी जी की हत्या के लिये उतने ही जिम्मेवार थे जितने कि नाथूराम गोडसे या उनके अन्य साथी। इस दृष्टि से यदि विचार किया जाये तो मदनलाल पाहवा को इस बात के लिये पुरस्कृत किया जाना चाहिये था ना कि दण्डित क्योंकि उसने तो हत्या–काण्ड से दस दिन पूर्व उसी स्थान पर बम फोड़कर सरकार को सचेत किया था कि गांधी, जिन्हें बडी श्रद्धा से नेहरू जी बापू कहते थे, अब सुरक्षित नहीं उन्हें कोई भी प्रार्थना सभा में जाकर शूट कर सकता है।

गांधी-हत्या के कारण : गांधी–हत्या के मुकद्दमें के दौरान न्यायमूर्ति खोसला से नाथूराम ने अपना वक्तव्य स्वयं पढ़ कर सुनाने की अनुमति माँगी थी और उसे यह अनुमति मिली थी। नाथूराम गोडसे का यह न्यायालयीन वक्तव्य भारत सरकार द्वारा प्रतिबन्धित कर दिया गया था। इस प्रतिबन्ध के विरुद्ध नाथूराम गोडसे के भाई तथा गांधी–हत्या के सह–अभियुक्त गोपाल गोडसे ने ६० वर्षों तक वैधानिक लड़ाई लड़ी और उसके फलस्वरूप सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रतिबन्ध को हटा लिया तथा उस वक्तव्य के प्रकाशन की अनुमति दी। नाथूराम गोडसे ने न्यायालय के समक्ष गांधी–वध के जो १५० कारण बताये थे उनमें से प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं।

१. अमृतसर के जलियाँवाला बाग गोली काण्ड (१९१९) से समस्त देशवासी आक्रोश में थे तथा चाहते थे कि इस नरसंहार के नायक जनरल डायर पर अभियोग चलाया जाये। गांधी ने भारतवासियों के इस आग्रह को समर्थन देने से स्पष्ठ मना कर दिया।

२. भगत सिंह व उसके साथियों के मृत्युदण्ड के निर्णय से सारा देश क्षुब्ध था व गांधी की ओर देख रहा था, कि वह हस्तक्षेप कर इन देशभक्तों को मृत्यु से बचायें, किन्तु गांधी ने भगत सिंह की हिंसा को अनुचित ठहराते हुए जनसामान्य की इस माँग को अस्वीकार कर दिया।

३. ६ मई १९४६ को समाजवादी कार्यकर्ताओं को दिये गये अपने सम्बोधन में गांधी ने मुस्लिम लीग की हिंसा के समक्ष अपनी आहुति देने की प्रेरणा दी।

४. मोहम्मद अली जिन्ना आदि राष्ट्रवादी मुस्लिम नेताओं के विरोध को अनदेखा करते हुए १९२१ में गांधी ने खिलाफत आन्दोलन को समर्थन देने की घोषणा की। तो भी केरल के मोपला मुसलमानों द्वारा वहाँ के हिन्दुओं की मारकाट की जिसमें लगभग १५०० हिन्दू मारे गये व २००० से अधिक को मुसलमान बना लिया गया। गांधी ने इस हिंसा का विरोध नहीं किया, वरन् खुदा के बहादुर बन्दों की बहादुरी के रूप में वर्णन किया।

५. १९२६ में आर्य समाज द्वारा चलाए गए शेष पृष्ठ 10 पर

हिन्दुत्व के स्वर्णिम इतिहास से क्यों भयभीत हैं विदेशी लेखक

✍ दिनेश चन्द्र त्यागी

प्रातः स्मरणीय हिन्दू कूल शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयन्ती ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को मनाई जाती है। हिन्दू राष्ट्र के क्रांति शिरोमणि, सेनानायक स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर का जन्मदिन २८ मई (१८८३) है। ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को हिन्दू साम्राज्य दिवस मनाते हैं। इस दिन ६ जून १६७४ ई. को छत्रपति शिवाजी महाराज का हिन्दू पद पादशाही के संस्थापक के रूप में राज्याभिषेक किया गया था। इस प्रकार हिन्दुत्व के अनुरागी कार्यकर्ताओं के लिए ये प्रसंग महान प्रेरणा का दिव्य पर्व होते हैं। हिन्दू धर्म व हिन्दू राष्ट्र की अखण्ड परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए जिन ज्ञात–अज्ञात महापुरुषों ने अपना जीवन होम कर दिया, उनका जीवन चरित्र पढ़ने के लिए जो उपयोगी साहित्य होना चाहिए वह दुर्लभ सा ही प्रतीत होता है। विपरीत धाराएँ साहित्य में प्रभावी रहती हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर जो पाठ्यक्रम है जिससे निष्पक्ष चिन्तनधारा की आशा की जा सकती है, वह भी पूर्वाग्रहों व दुराग्रहों से ग्रसित है। इसीलिए महाराणा प्रताप सरीखे उज्ज्वल चरित्र पर भी बहुत–सा भ्रांतिमूलक साहित्य गढ़ दिया गया है जिसे आज नई पीढ़ी को अनवरत पढ़ाया भी जा रहा है। पं. नेहरू द्वारा छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप को पथभ्रष्ट देशभक्त तक लिखा जा चुका है। जबकि ऐसा लिखने वाले गाँधी व नेहरू जैसे कथित नेता अपने जीवन में स्वयं इतने पथभ्रष्ट हो गये थे कि भारत का विभाजन कराकर पाकिस्तान बनवाने की स्वीकृति देने में वे सबसे आगे की पंक्ति में खड़े दिखाई देते थे।

महाराणा प्रताप : १६६८ में महाराणा प्रताप हिस्टोरिकल ट्रस्ट, उदयपुर ने एक दुर्लभ पुस्तक का प्रकाशन किया। **पं. गौरीशंकर ओझा द्वारा लिखित 'वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप'** जो प्रथम बार १९२८ में प्रकाशित हुई थी। आश्चर्य का विषय है कि फिर ७० वर्ष तक उसका पुनः प्रकाशन नहीं किया जा सका। किसी विश्वविद्यालय के खोजकर्ता को संभवतः इसलिए इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि कर्नल टॉड द्वारा लिखे राजस्थान के इतिहास को ओझा जी की पुस्तक में सप्रमाण चुनौती दी गई थी। यदि १६६८ में यह पुस्तक पुनः प्रकाशित न होती तो संभवतः मैकाले के मानसपुत्र इस पुस्तक की सामग्री को काल के ग्रास में समा देते।

पुस्तक की भूमिका में जो संदेश प्रकाशित किया गया है वह मनन करने योग्य है–"संसार के साहित्य में इतिहास का स्थान बहुत ऊँचा है। किसी जाति को सजीव रखने, अपनी उन्नति करने तथा उस पर दृढ़ रहकर सदा अग्रसर होते रहने के लिए संसार में इतिहास से बढ़कर दूसरा कोई साधन नहीं है। वीर पुरुषों के गौरवपूर्ण आदर्श चरित्रों से मनुष्य जाति एवं राष्ट्रों में एक संजीवनी शक्ति का संचार होता है।... महाराणा प्रताप सिंह का आसन राजपूताने के इतिहास में ही नहीं, किन्तु संपूर्ण भारतवर्ष के इतिहास में भी बहुत ऊँचा है। राजपूताने

के इतिहास को इतना अधिक उज्ज्वल, आदर्श तथा महत्त्वपूर्ण बनाने का श्रेय महाराणा प्रताप को ही प्राप्त है। महाराणा प्रताप स्वतंत्रता के पुजारी, अपने कुल गौरव के रक्षक एवं आत्माभिमान और वीरता के अवतार थे।"

हल्दीघाटी का युद्ध : हल्दीघाटी का युद्ध ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया सं. १६३३ विक्रमी (सन् १५७६ ई.) को हुआ था। इस युद्ध का आँखों देखा हाल अल बदायूँनी ने भी लिखा है और राजस्थानी साहित्य में इसका प्रचुर उल्लेख है। दोनों पक्षों ने अपनी–अपनी विजय के दावे किए हैं। कर्नल टॉड ने इस युद्ध के बाद महाराणा की दर्दनाक स्थिति हो जाने के कारण मेवाड़ से पलायन करके सिंध की ओर प्रस्थान करने और अकबर के पास संधिपत्र भेजे जाने तक का वर्णन किया है। जबकि वास्तविक इतिहास का निष्कर्ष कुछ और ही है। जून १५७६ ई. में हल्दीघाटी युद्ध होने के बाद महाराणा २१ वर्ष और जिये (१६ जनवरी १५९७ ई. स्वर्गारोहण)। इतिहास साक्षी है कि इन वर्षों में महाराणा ने अकबर से लोहा लेकर ३४ में से ३२ किले वापिस छीनने में सफलता प्राप्त की। शेष दो किलों पर उनके पुत्र अमर सिंह ने विजय ध्वज लहराया।

यदि महाराणा की दयनीय स्थिति रही होती और हल्दीघाटी युद्ध में उन्हें पूर्ण विफलता मिली होती तो बाद के वर्षों में इतनी दुर्लभ विजय प्राप्त करने का गौरव उन्हें नहीं मिल सकता था।

अतः आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन पृष्ठों को अनावृत्त करें जो अंग्रेज व मुस्लिम इतिहासकारों ने तथा उनके मानसपुत्रों की कथित धर्मनिरपेक्ष, राष्ट्रनिरपेक्ष, देशभक्ति निरपेक्ष व हिन्दू निरपेक्ष लेखनी ने जो कुछ अनर्थ इतिहास के साथ किया है, अब समय आ गया है कि उसे ध वस्त किया जाए।

एक झाँकी हल्दीघाटी युद्ध की : अल बदायूँनी (अकबर का दरबारी) हल्दीघाटी युद्ध का वर्णन करते हुए लिखता है–**'भूमि ऊँची-नीची, रास्ते टेढ़े-मेढ़े और काँटों वाले होने के कारण हमारी हरावल में गड़बड़ी मच गई जिससे हमारी (हरावल की) पूरी तौर से हार हुई। हमारी सेना के राजपूत जिनका मुखिया राजा लूणकरण था और जिनमें से अधिकतर वाम पार्श्व में थे, भेड़ों के झुण्ड की तरह भाग निकले और हरावल को चीरते हुए अपनी रक्षा के लिए दक्षिण पार्श्व की ओर दौड़े।... इस समय दोनों पक्षों के मरे हुए वीरों के शवों से रण क्षेत्र छा गया।...**

हमारी जो फौज पहले हमले में ही भाग निकली थी, नदी (बनास) को पार कर ५–६ कोस तक भागती ही रही। इस तबाही के समय मिहतरखाँ अपनी सहायक सेना सहित चंद्रावल से निकल आया।

ग्वालियर के राजा मान के पोते रामशाह ने, जो हमेशा राणा (प्रताप) की हरावल में रहता था, ऐसी वीरता दिखलाई जिसका वर्णन करना लेखनी की शक्ति से बाहर है।

उस समय लू आग के समान चल रही थी, हमारे सैनिकों में चलने–फिरने की भी शक्ति न रही थी और सेना में यह खबर भी फैल गई थी कि राणा छल के साथ पहाड़ के पीछे घात लगाये खड़ा होगा। इसी से हमारे सैनिकों ने राणा के सैनिकों का पीछा न किया। वे अपने डेरों में लौट आये और घायलों का इलाज करने लगे।" आदि–आदि।

उदयपुर के जगदीश मंदिर से प्राप्त प्रशस्ति में लिखा है–"अपनी प्यारी तलवार को हाथ में लिये प्रताप सिंह प्रातः काल युद्ध में आया तो मान सिंह वाली शत्रु की सेना ने छिन्न–भिन्न होकर पैर संकोचते हुए पीठ दिखाई।" राणारास आदि मेवाड़ से सम्बन्ध ा रखने वाली पुस्तकों में भी महाराणा की विजय होना लिखा है।

इस संबंध में महान लेखक गौरीशंकर हीराचंद ओझा लिखते हैं–"उस समय के संसार के सबसे बड़े संपन्न और प्रतापी बादशाह अकबर के सामने एक छोटे से प्रदेश के स्वामी राणा प्रताप ने जिस साहस, धैर्य व पराक्रम का परिचय दिया वह अतुलनीय है। राणा का आदर्श, कुलाभिमान, बादशाह के आगे दूसरे राजाओं के समान सिर न झुकाने का अटलव्रत, अनेक आपत्तियाँ सहकर भी अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने का प्रण और उसका वीरत्व, वे ही उनको उत्साहित करते रहते थे।

महाराणा ने हल्दीघाटी के युद्ध के बाद कुछ पहाड़ी नाके और रास्ते रोक लिये, जिससे गोगूंदे वाली शाही सेना के लिए रसद आदि सामान का पहुँचना रुक गया और मुगल सेना की आपत्ति दिन–दिन बढ़ती गई।

मानसिंह को गोगूंदे में रहते हुए चर मास बीत गए थे। इस पर नाराज होकर अकबर ने उसे तथा आसफ खाँ और काजी खाँ को वहीं से चले आने की आज्ञा लिख भेजी और उसकी असफलता के कारण उनकी ड्योढ़ी बन्द कर दी।

गोगूंदे में शाही सेना कैदियों के समान पड़ी हुई थी। जब कभी थोड़े से सैनिक रसद का सामान लेने के लिए आते तो उन पर राजपूत धावा करते थे। इस अवधि में महाराणा ने बहुत से थानों की स्थापना की और अपना केन्द्र कुम्भलगढ़ बना लिया।

इस प्रकार अकबर की महाराणा प्रताप सिंह पर की गई पहली चढ़ाई निष्फल हुई जिससे उसकी क्रोधाग्नि और भी भड़क उठी।"

शाही सेना के लौट जाने पर महाराणा प्रताप ने अपनी सैन्य व राज्य शक्ति में अपूर्व वृद्धि की तथा कई राजाओं को अपने साथ मिलाने में सफलता प्राप्त की।

इस महान ऐतिहासिक घटनाक्रम का विस्तृत वर्णन पाठकों को विस्तार से पढ़ने को मिल सकता है।

आज हमें इस प्रसंग पर इतनी ही समीक्षा करनी है कि भारत के वास्तविक हिन्दू इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों को खोजने का महान उद्योग हमें प्रारंभ करना होगा। स्वातंत्र्यवीर सावरकर ने भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ लिखकर हमारा मार्गदर्शन किया है। ऐसे स्वर्णिम पृष्ठ छः हजार भी लिखे जाएँ तो कम ही होंगे।

१८५७ का स्वातंत्र्य समर सावरकर जी ने लन्दन में लिखा तो अंग्रेज सरकार थर्रा उठी, तहलका मच गया ब्रिटिश साम्राज्य में। पुस्तक पर छपने से पहले ही प्रतिबंध लगा दिया गया। भले ही

शेष पृष्ठ 11 पर

इतिहास स्वयं को दोहराता है

✍ प्रो० ए०पी० सारस्वत

❖ जून ६३१ ई. के पश्चात कोई भी मूर्तिपूजक मक्का में धर्मयात्रा नहीं कर सकेगा और न काले पत्थर की परम्परागत ढंग से पूजा कर सकेगा। इसके बाद इस पवित्र क्षेत्र में या इसके बाहर **काफिर और अविश्वासों के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया जाता है—''उन्हें मार दिया जाना है, पकड़ लिया जाना है, उनकी घात में बैठना है**

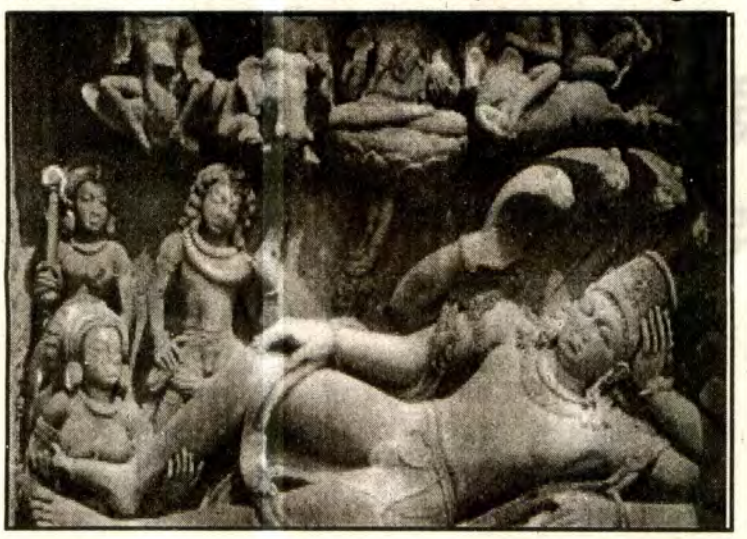

जहाँ भी वे पाए जायें।'' यह एक आदेश था, यह नवधर्म (इस्लाम) की आत्मा थी, **काबा में मूर्तिपूजा बन्द कर दी गई और काबा का काला पत्थर अब सब के द्वारा पूज्य नहीं रहा। अब वह केवल मुसलमानों का देवता रह गया था।**

❖ 'ग्रेनाडा' में काबा का इतिहास ८३६ वर्ष पश्चात स्वयं को दुहराता है परन्तु विपरीत उल्टे क्रम में। ग्रेनाडा के इस्लामी दुर्ग के गिरने के दो वर्ष पश्चात स्पेन की भूमि पर ईसावेला ने मार्च की उसी तारीख और उसी दिन वही खौफनाक आदेश जारी किया जिसे मुहम्मद ने उसी दिन मार्च ६३१ ई. को काबा मन्दिर में जारी किया था। इस बार आदेश काफिरों द्वारा मुसलमानों को दिये जा रहे थे। इस समय मुसलमान इन आदेशों का पालन करने वाले थे। **जून १४९४ के पश्चात कोई भी मुसलमान स्पेन की पवित्र भूमि पर नहीं रहेगा, या तो उसे ईसाई धर्म ग्रहण करना होगा या देश छोड़कर जाना होगा।**

❖ **बोसनिया, जनवरी १९९४ :** इस्लामी पैगम्बर द्वारा अनुमोदित कर्म—अधिकार (licence) अब यहाँ सिद्धान्त और व्यवहार में पूरी तरह लागू था, भेड़—बकरियों की तरह ३००० मुस्लिम लड़कियों एवं स्त्रियों को 'माल—ए—गनीमत' की तरह सर्ब मिलिशिया सैनिक कैम्पों में बन्द कर रखा था, युद्ध के कैदी एवं गुलामों की तरह, जिन्हें "सर्ब सैनिकों ने सीधे हाथ से हासिल किया था।" और जो महान दुर्भाग्यपूर्ण एवं आश्चर्य था वह सर्ब मिलिशिया कैम्पों के दरवाजे पर लटका अंग्रेजी एवं अरबी में बैनर था—**''हलाल है... जिसे भी तुम्हारा दाहिना हाथ... युद्ध में लूट में से तुम्हें अल्लाह ने बक्शा है।''-उन युवा स्त्रियों को ले लो जो तुम्हारा दाहिना हाथ पकड़ लेता है। -जब कोई गुलाम स्त्री तुम्हारे/अपने अपहरणकर्ता मालिक से संतान पैदा कर लेती है, तब वह एक स्वतंत्र स्त्री बन जाती है।** ये अभागी गुलाम लौंडी बनाई गई मुस्लिम लड़कियाँ एवं स्त्रियाँ केवल अपने ही 'उतरे/अवतरित मुस्लिम नियम' से स्वतंत्र हो सकती हैं यदि वे किसी सर्ब सैनिक से सहयोग करके एक बच्चा पैदा कर लें अन्यथा उन्हें जीवन भर एक गुलाम लौंडी की तरह जीवन व्यतीत करना होगा।

इस्लाम व ईसाइयत ने जहाँ भी शरण ली, आक्रमण या घुसपैठ की, उस भू—भाग की मूल—संस्कृति को नष्ट कर दिया, भले ही संस्कृति को मिटाने में सैकड़ों वर्ष लगे। इसी प्रकार—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों, मैक्सिको के मायाओं, यूरोप के हीथेन और उनकी पगान संस्कृति, ईरान के अग्निपूजकों (आर्य), अरेबिया के मूर्तिपूजक (पैगन) आदि की संस्कृति विलुप्त हो चुकी है। **विश्व में २००० वर्ष पूर्व ईसाइयत नहीं थी और न ही १४०० वर्ष पूर्व इस्लाम था।** आज विश्व के अधिकांश भूभाग पर दोनों सम्प्रदायों के राज्य हैं, परन्तु किसी भी ईसाई या मुस्लिम को यह भी नहीं मालूम है कि उसके पूर्वज कौन थे? उसका मूल धर्म क्या था? किन परिस्थितियों में उसके पूर्वजों को अपने मूलधर्म का त्याग करना पड़ा? यथार्थ यह है कि भारतीय उप—महाद्वीप में रह रहे लगभग ९५ प्रतिशत ईसाई व मुस्लिमों के पूर्वज हिन्दू थे। अतः आवश्यकता है कि दोनों सम्प्रदायों के लोग अपने पूर्वजों का सिजरा/वंशावली तैयार करने के साथ—साथ अपने धार्मिक ग्रन्थों और इतिहास का गहन अध्ययन व मनन करें, ताकि वास्तविकता उजागर हो सके और उनका झुकाव व रहमदिली अपने पूर्वजों के धर्म की ओर हो सके।

मैकाले का दि. २ फरवरी, १८३५ को ब्रिटिश संसद को सम्बोधन—''मैंने पूरे भारत में चारों ओर दौरा किया और पाया कि घोर गरीबी, पिछड़ेपन और अपने ही देश में द्वितीय श्रेणी के नागरिक होने के बावजूद एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं देखा जो चोर हो। इस देश में इतनी सम्पदा, इतना उच्च चरित्र, लोगों में इतनी योग्यता है कि मैं नहीं सोचता कि इस देश को जीता जा सकेगा, जब तक कि इस देश की रीढ़ को न तोड़ दिया जाये, जो इस देश की आध्यात्मिक व पैतृक सम्पत्ति है। इसलिये मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि हम उसकी प्राचीन शिक्षा—प्रणाली, उसकी संस्कृति को बदल दें, ताकि वह यह सोचने लगे कि जो कुछ विदेशी व आंग्ल है, वह उनसे अधिक महान है। इस प्रकार वे स्वाभिमान, अपनी स्वाभाविक संस्कृति को खो देंगे और सचमुच हमारी इच्छानुसार हमारे आधीन हो जायेंगे।''

अंग्रेजों से पूर्व मुस्लिम आक्रान्ता मुहम्मद बिन कासिम ने भारत के विरुद्ध ७१२ ई. को इस्लामिक जिहाद प्रारम्भ किया। हज्जाज (चाचा) के बिन कासिम को स्थाई आदेश थे—**''हिन्दुओं के प्रति कोई दया नहीं की जाये, उनकी गर्दनें काट दी जायें, और महिलाओं व बच्चों को कैदी बना लिया जाये।'' (चर्चनामा : ईलियट और डाउसन, खण्ड १ पृ. ७६३)**

हज्जाज की वे शर्तें और सूचनाएँ कुरान के आदेशों के पूर्णतः अनुरूप ही थीं। इस विषय में कुरान का आदेश है—''फिर जब हराम के महीने बीत जायें तो मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) को जहाँ कहीं पाओ कत्ल करो, और पकड़ो, और उन्हें घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे तौबा कर लें, नमाज कायम करें और जकात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो।'' (सूरा ६ : आयत ५, पृ. ३६८)

''और उन (गैर-ईमान वालों) से युद्ध करो, यहाँ तक कि फितना (उपद्रव) शेष न रहे और 'दीन' (इस्लाम) अल्लाह का हो जाए।'' (२:१६३ पृ. १५८)

''और उनमें से जिस किसी को तुम्हारा हाथ पकड़ ले उन सबको अल्लाह ने तुम्हें लूट के माल के रूप में दिया है'' (३३:५८ पृ. २५

''तो जो कुछ गनीमत (लूट का माल) तुमने हासिल किया है उसे हलाल व पाक समझ कर खाओ'' (१०.८.६६ पृ. २५)

"इस सन्दर्भ में यहाँ यह कह देना उचित ही होगा कि **'गैर-मुसलमानों' की महिलायें और बच्चे लूट के माल में ही सम्मिलित रहते थे।** (जयदीप सेन, भारत में जिहाद)

सभी इस्लामी शास्त्रों, सिद्धान्तों, आदर्शों और विधि—विधानों का एकमात्र उद्देश्य विश्व के सभी अन्य धर्मों को समाप्त करना और सभी सम्भव उपायों द्वारा गैर—इस्लामी राष्ट्रों में अल्लाह का राज्य स्थापित करना है तथा वहाँ के लोगों को इस्लाम में मतान्तरित करना है, चाहे गैर—मुसलमानों को यह कार्य कितना ही बुरा क्यों ना लगे। इस संबंध में कुरान (अनुवाद मु. फारुख खां, सं. १९८०) का आदेश है—

''वही है जिसने अपने 'रसूल' को मार्गदर्शन और सच्चे 'दीन' धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा ताकि उसे समस्त 'दीन' पर प्रभुत्व प्रदान करे चाहे मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) को नापसन्द क्यों न हो।'' (९:३३, पृ. ३७३)

''उनसे युद्ध करो जहाँ तक कि फितना (उपद्रव) शेष न रहे और 'दीन अल्लाह का हो जाए' (२:१६३ पृ. १५८;८:३९, पृ.३५४)

''अल्लाह के नाम पर और अल्लाह के मार्ग में उनसे युद्ध करो जो इस्लाम में विश्वास न रखते हों'' (हदीस मुस्लिम खण्ड ३ : ४२९४, पृ. ११३७)

मुसलमान, गैर-मुसलमानों के सामने तीन शर्तें रखें—वे इस्लाम कबूल करें या जजिया टैक्स दें, यदि वे इन दोनों शर्तों को न मानें, तो उनसे सशस्त्र युद्ध करो'' (हदीस दाउद, खण्ड २:२९०६, पृ. ७२२; हदीस मुस्लिम खण्ड ३:४२९४, पृ. ११३७)

इसीलिए स्वयं पैगम्बर ने अरेबिया के यहूदियों, ईसाइयों, मूर्तिपूजकों व अन्य कबीलों से अनेकों युद्ध किए। अपने पैगम्बर के आदर्शों का पालन करते हुए मुसलमान तभी से सारे विश्व में आज तक गैर—मुसलमानों को मुसलमान और उनके राज्यों को इस्लामी राज्य बनाने के लिए जिहाद करते आ रहे हैं। (डॉ.के. वी. पालीवाल, मुसलमानों का उद्देश्य—भारत का इस्लामीकरण)

यह अमानवीय घृणित कार्य बिन कासिम (७१२ ई.) से लेकर टीपू सुल्तान (१८०० ई.) तक निर्बाध रूप से जारी रहा, किन्तु पूर्ण सफलता वर्ष १९४७ में हिन्दू व मुस्लिम के आधार पर भारत का विभाजन पाकिस्तान के रूप में होने पर प्राप्त हुई, परन्तु दोनों के बीच हिन्दू—मुस्लिम आबादी की अदला—बदला की गई। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने तो आबादी की अदला—बदली को सभी हिन्दू—मुस्लिम समस्याओं का हल बताया परन्तु नेहरू ने बलपूर्वक अदला—बदली क्रियान्वयन अस्वीकार कर 'दीन' की सेवा की, फलस्वरूप वैदिक संस्कृति और उसके अनुयायी लाखों हिन्दू पाकिस्तान व वर्तमान बांग्लादेश में कत्ल कर दिये गये या इस्लाम धर्म में धर्मान्तरित कर लिये गए। भारत का बंटवारा हिन्दू—मुस्लिम आधार पर होने के बावजूद मुस्लिमों को हिन्दुस्तान में बनाये रख कर बंटवारा किया जाना समझ से परे है।

"इस्लाम के धर्मग्रन्थों में न केवल भारत, अपितु विश्व में इस्लाम धर्म और इस्लामी राज्य स्थापित करने के लिए मुख्यतः दो व्यापक नीतियाँ अनिवार्य रूप से अपनाने का आदेश दिया गया है—

शेष पृष्ठ 11 पर

करतार सिंह सराभा के बलिदान दिवस पर विशेष

भारत को स्वराज दिलवाने और अंग्रेजी शासन को समाप्त करने जैसे उद्देश्यों को पूरा करने के जिन क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी, उन निर्भय स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे करतार सिंह सराभा। जिन्होंने मात्र १६ वर्ष की उम्र में भारत के सम्मान की खातिर अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। करतार सिंह सराभा का जन्म १८९६ में लुधियाना, पंजाब के सराभा ग्राम के एक जाट सिख परिवार में हुआ था। करतार सिंह काफी छोटे थे तभी इनके पिता का निधन हो गया था। करतार सिंह का पालन–पोषण उनके दादा ने किया था। अपने गांव से प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने लुधियाना के मालवा खालसा हाई स्कूल में दाखिला लिया। दसवीं की परीक्षा पूरी करने के बाद करतार सिंह आगे की पढ़ाई के लिए अपने चाचा के पास उड़ीसा चले गए। पंद्रह वर्ष की आयु में करतार सिंह के अभिभावकों ने उन्हें काम करने के लिए अमरीका भेज दिया। १९१२ में सैन फ्रांसिस्को पोत, अमरीका पहुंचने के बाद अप्रवासन अधिकारी ने भारतीय लोगों से बहुत बुरे लहजे में बात की लेकिन अन्य देशों के लोगों से वह सामान्य रहा। जब करतार सिंह ने अपने साथी से इसका कारण पूछा तो उन्हें यह बताया गया कि भारत एक गुलाम देश है और उनके दासों के साथ ऐसा ही व्यवहार होता है। इस घटना ने करतार सिंह सराभा को बहुत

S. Kartar Singh Sarabha

ज्यादा प्रभावित किया। वर्ष १९१४ में भारतीय लोग विदेशों में जाकर या तो बंधुआ श्रमिकों के रूप में काम करते थे या फिर अंग्रेजी फौज में शामिल होकर उनके साम्राज्यवाद को बढ़ाने में अपनी जान दे देते थे। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिर्फोनिया एट बर्कले में दाखिला लेने के बाद करतार सिंह ने अन्य लोगों से मिल भारत को आजाद कराने के लिए कार्य करना शुरू किया।

गदर पार्टी और समाचार पत्र का प्रकाशन

२१ अप्रैल, १९१३ को कैलिफोर्निया में रह रहे भारतीयों ने एकत्र हो एक क्रांतिकारी संगठन गदर पार्टी की स्थापना की। गदर पार्टी का मुख्य उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष द्वारा भारत को अंग्रेजी गुलामी से मुक्त करवाना और लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना करना था। १ नवंबर, १९१३ को इस पार्टी ने गदर नामक एक समाचार पत्र का प्रकाशन करना प्रारंभ किया। यह समाचार पत्र हिंदी और पंजाबी के अलावा बंगाली, गुजराती, पश्तो और उर्दू में भी प्रकाशित किया जाता था। गदर का सारा काम करतार सिंह ही देखते थे। यह समाचार पत्र सभी देशों में रह रहे भारतीयों तक पहुंचाया जाता था। इसका मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी शासन की क्रूरता और हकीकत से लोगों को अवगत करना था। कुछ ही समय के अंदर गदर पार्टी और समाचार पत्र दोनों ही लोकप्रिय हो गए।

पंजाब में विद्रोह

१९१४ में प्रथम विश्व युद्ध के समय अंग्रेजी सेना युद्ध के कार्यों में अत्याधिक व्यस्त हो गई। इस अवसर का पूरा फायदा उठाते हुए गदर पार्टी के सदस्यों ने ५ अगस्त, १९१४ को प्रकाशित समाचार पत्र में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध डिसिजन ऑफ डेक्लेरेशन ऑफ वार नामक लेख प्रकाशित किया. हर छोटे–बड़े शहर में इस लेख की कॉपिया वितरित की गईं। करतार सिंह गदर पार्टी के दो अन्य सदस्यों और काफी के साथ कोलम्बो होते हुए कलकत्ता पहुंचे। युगांतर के संपादक जतिन मुखर्जी के परिचय पत्र के साथ करतार सिंह रास बिहारी बोस से मिले। करतार सिंह ने बोस को बताया कि जल्द ही २०,००० अन्य गदर कार्यकर्ता भारत पहुंच सकते हैं। सरकार ने विभिन्न पोतों पर गदर पार्टी के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया। लेकिन फिर भी लुधियाना के एक ग्राम में गदर सदस्यों की सभा हुई। इस सभा में धनी लोगों के घर चोरी कर हथियार खरीदने का निर्णय लिया गया। २५ जनवरी, १९१५ को रास बिहारी बोस के आने के बाद २१ फरवरी से सक्रिय आंदोलन की शुरूआत करना निश्चित किया गया। फिरोजपुर छावनी में चोरी करने के बाद अंबाला और दिल्ली जाना निर्धारित हुआ।

विद्रोह की असफलता

पाल सिंह नामक पुलिस के एक मुखबिर ने अंग्रेजी पुलिस को इस दल के कार्यों और योजनाओं की सूचना दी। पुलिस ने कई गदर कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया। इस अभियान की असफलता के बाद सभी लोगों ने अफगानिस्तान जाने की योजना बनाई। लेकिन बीच रास्ते में ही करतार सिंह ने अपने गिरफ्तार साथियों के पास वापिस लौटने का निर्णय कर लिया। २ मार्च, १९१५ को करतार सिंह अपने दो साथियों के साथ वापिस लायलपुर, चौकी संख्या–५ पहुंचे। वहां पहुंच उन्होंने तैनात सेना अफसरों से विद्रोह किया, लेकिन आखिरकार उन्हें साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। १३ सितंबर, १९१५ को करतार सिंह और उनके साथियों को लाहौर सेंट्रल जेल भेज दिया गया। वर्ष १९१४–१५ में अंग्रेजों के विरुद्ध पहली साजिश में २४ लोगों को फांसी की सजा दी गई। कोर्ट ने सभी पकड़े गए विद्रोहियों में से करतार सिंह को सबसे ज्यादा खतरनाक ठहराया। करतार सिंह को मात्र १९ वर्ष की आयु में १६ नवंबर, १९१५ को फांसी दे दी।

१९ नवम्बर जयंती पर विशेष, खूब लड़ी मरदानी अरे झांसी वाली रानी

स्वतंत्रता और स्वाधीनता प्राणिमात्र का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसी से आत्मसम्मान और आत्मउत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। भारतीय राष्ट्रीयता को दीर्घावधि विदेशी शासन और सत्ता की कुटिल–उपनिवेशवादी नीतियों के चलते परतंत्रता का दंश झेलने को मजबूर होना पड़ा था और जब इस क्रूरतम कृत्यों से भरी अपमानजनक स्थिति की चरम सीमा हो गई तब जनमानस उद्वेलित हो उठा था। अपनी राजनैतिक–सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक पराधीनता से मुक्ति के लिए क्रान्ति यज्ञ की बलिवेदी पर अनेक राष्ट्रभक्तों ने तन–मन–जीवन अर्पित कर दिया था।

क्रान्ति की ज्वाला सिर्फ पुरुषों को ही नहीं आकृष्ट करती बल्कि वीरांगनाओं को भी उसी आवेग से आकृष्ट करती है। भारत में सदैव से नारी को श्रद्धा की देवी माना गया है, पर यही नारी जरूरत पड़ने पर चंडी बनने से परहेज नहीं करती। 'स्त्रियों की दुनिया घर के भीतर है, शासन–सूत्र का सहज स्वामी तो पुरुष ही है' अथवा 'शासन व समर से स्त्रियों का सरोकार नहीं' जैसी तमाम पुरुषवादी स्थापनाओं को ध्वस्त करती इन वीरांगनाओं के बिना स्वाधीनता की दास्तान अधूरी है, जिन्होंने अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिया। १८५७ की क्रान्ति में जहाँ रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल, रानी अवन्तीबाई, रानी राजेश्वरी देवी, झलकारीबाई, ऊदा देवी, अजीजनबाई जैसी वीरांगनाओं ने अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिये, वहीं १८५७ के बाद अनवरत चले स्वाधीनता आन्दोलन में भी नारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इन वीरांगनाओं में से अधिकतर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे किसी राजवाड़े में पैदा नहीं हुई बल्कि अपनी योग्यता की बदौलत उच्चतर मुकाम तक पहुँचीं।

१८५७ की क्रान्ति की अनुगूँज में जिस वीरांगना का नाम प्रमुखता से लिया जाता है, वह झांसी में

क्रान्ति का नेतृत्व करने वाली रानी लक्ष्मीबाई हैं। १९ नवम्बर १८३५ को बनारस में मोरोपंत तांबे व भगीरथी बाई की पुत्री के रूप में लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ। उनका बचपन का नाम मणिकर्णिका था, पर प्यार से लोग उन्हें मनु कहकर पुकारते थे। काशी में रानी लक्ष्मीबाई के जन्म पर प्रथम वीरांगना रानी चेनम्मा को याद करना लाजिमी है। १८२४ में कित्तूर (कर्नाटक) की रानी चेनम्मा ने अंग्रेजों को मार–भगाने के लिए 'फिरंगियों भारत छोड़ो' की ध्वनि गुंजित की थी और रणचंडी का रूप धर कर अपने अदम्य साहस व फौलादी संकल्प की बदौलत अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे। कहते हैं कि मृत्यु से पूर्व रानी चेनम्मा काशीवास करना चाहती थीं पर उनकी यह चाह पूरी न हा सकी थी। यह संयोग ही था कि रानी चेनम्मा की मौत के ६ साल बाद काशी में ही लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ। बचपन में ही लक्ष्मीबाई अपने पिता के साथ बिठूर आ गईं। वस्तुतः १८१८ में तृतीय मराठा युद्ध में अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय की पराजय पश्चात् उनको ८ लाख रुपये की वार्षिक पेंशन मुकर्रर कर बिठूर भेज दिया गया। पेशवा बाजीराव द्वितीय के साथ उनके सरदार मोरोपंत तांबे भी अपनी पुत्री लक्ष्मीबाई के साथ बिठूर आ गए। लक्ष्मीबाई का बचपन नाना साहब के साथ कानपुर के बिठूर में ही बीता। लक्ष्मीबाई की शादी झांसी के राजा गंगाधर राव से हुई। १८५३ में अपने पति राजा गंगाधर राव की मौत के पश्चात रानी लक्ष्मीबाई ने झांसी का शासन संभाला पर अंग्रेजों ने उन्हें और उनके दत्तक पुत्र को शासक मानने से इंकार कर दिया। अंग्रेजी सरकार ने रानी लक्ष्मीबाई को पाँच हजार शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री राजनाथ सिंह जी,
माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार
नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली-११०००१

विषय : बांग्लादेशियों को वापस भेजने तथा उनके फर्जी बने पहचान पत्रों की जांच कर निरस्त करने की मांग।

महोदय,

आपको ज्ञात हो कि देश के प्रमुख औद्योगिक शहर नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा सहित दिल्ली–एनसीआर में बांग्लादेशी मजदूरों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। नोएडा के सेक्टर–७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, सहित नवनिर्मित सेक्टरों में बिल्डर साइटों पर हजारों बांग्लादेशी मजदूरों ने झुग्गियां बना ली हैं। बांग्लादेशी पुरुष निर्माण कार्यों में मजदूरी करता है तथा महिलाएं घरों में नौकरानी के रूप में कार्य करती हैं। मजदूरी करने के साथ–साथ बांग्लादेशी पुरुष व महिलायें घरों में चोरी करने, छीना–झपटी करने के अलावा कई आपराधिक घटनाओं को अंजाम देता है। इनकी बढ़ती संख्या के कारण नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा औद्योगिक शहर सहित समस्त दिल्ली–एनसीआर एक आपराधिक क्षेत्र बनते जा रहा है। दिनांकः १२.०७.२०१७ को लगभग ५०० की संख्या में बांग्लादेशी मजदूरों ने सेक्टर–७८, नोएडा के महागुन माडर्न सोसाइटी के एक घर पर धाबा बोल दिया तथा घर में तोड़–फोड़ किया। यदि घर में रहने वाले लोग छिपते नहीं तो परिवार के सदस्यों की हत्या हो जाती। हमलावरों ने सेक्टर में जबरदस्त हंगामा किया तथा सेक्टरवासियों में आतंक पैदा किया। कृपया नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा औद्योगिक शहर, दिल्ली–एनसीआर के साथ–साथ पूरे देश को अपराध एवं आतंक से बचाने के लिये निम्नलिखित कार्यवाही करने की कृपा करें:–

१. सेक्टर–७८ के महागुन माडर्न सोसाइटी के फ्लैट में हमला करने वाले व उत्पात मचाने वाले सभी बांग्लादेशी मजदूरों पर कड़ी कानूनी कार्यवाही की जाये। दोषियों पर मुकदमा दर्ज कर जेल भेजा जाये। सभी उत्पातियों को वापस बांग्लादेश भेजा जाये।

२. नोएडा, ग्रेटर नोएडा, दिल्ली–एनसीआर सहित देष में किसी भी क्षेत्र में रहने वाले बांग्लादेशियों की पहचान की जाये तथा उसे वापस बांग्लादेश भेजा जाये।

३. कई बांग्लादेशियों ने फर्जी तरीके से पश्चिम बंगाल, बिहार तथा असम का फोटो पहचान पत्र बना रखा है। इसकी जांच खुफिया एजेंसियों तथा पुलिस से करायी जाये तथा दोशियों पर कड़ी कार्रवाई की जाये। साथ ही बांग्लादेशियों के पहचान पत्रों एवं आधार कार्डों को निरस्त किया जाये।

४. देश में बांग्लादेशी घुसपैठियों के काम करने पर रोक लगायी जाये।

५. बांग्लादेशी मजदूरों को काम पर लगाने वाली एजेंसियों, सुरक्षा एजेंसियों, बिल्डरों व ठेकेदारों पर कड़ी कार्रवाई की जाये।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक) — **राष्ट्रीय अध्यक्ष**
(मुन्ना कुमार शर्मा) — **राष्ट्रीय महासचिव**
(वीरेश त्यागी) — **राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री**

देश के गद्दारों को मताधिकार से वंचित किया जाये-हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर देश के गद्दारों व राष्ट्र विरोधियों को मताधिकार से वंचित करने की मांग की है। श्री शर्मा ने कहा है कि हिन्दुस्तान में कई गद्दार निवास करते हैं। वे खाते तो हैं भारत की, परन्तु गाते हैं पाकिस्तान की। उन्हें भारत भूमि से कोई प्रेम नहीं है। वे हमेशा ही भारत के टूटने का सपना देखते हैं। भारतीय सेना व अर्द्धसैनिक बल के जबानों पर हमले करता है, पाकिस्तान के लिये जासूसी करता है, देश को तोड़ने के लिये दहशतगर्द व पत्थरबाज पैदा करता है। गौमाता की हत्या करता है। इसके लिये अधिक–से–अधिक बच्चे पैदा करता है। भारत–पाकिस्तान के साथ क्रिकेट या हाकी के मैच में पाकिस्तान की जीत पर खुशियां मनाता है तथा भारत की जीत पर मातम मनाता है। ऐसे लोगों की संख्या भारत में लगातार बढ़ती जा रही है। हिन्दू महासभा नेता श्री शर्मा ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि भारत सरकार व राज्य सरकारें ऐसे राष्ट्रविरोधी तत्वों पर कड़ी कार्रवाई करने की बजाय उसको सभी प्रकार की सुविधायें व सहायता प्रदान करती हैं। हिन्दू महासभा राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने भारतीय प्रधानमंत्री से देश के गद्दारों को मताधिकार से वंचित करने तथा उसे दी जा रही सभी प्रकार की सरकारी सहायता व संरक्षण से वंचित करने, देश के गद्दारों व राष्ट्रविरोधियों को देश में रोजगार प्राप्त करने, व्यापार करने, अनुदान प्राप्त करने तथा बैंकों व वित्तीय संस्थानों से किसी भी प्रकार का कर्ज लेने पर पूर्ण रोक लगाने एवं जम्मू–कश्मीर के अलगाववादी नेताओं व हुर्रियत नेताओं की सभी प्रकार की सरकारी सहायता व सुरक्षा तत्काल समाप्त करने की मांग की है। श्री शर्मा ने कहा है कि देश में जो व्यक्ति इस भारत भूमि को मातृभूमि, पितृभूमि तथा पुण्य भूमि नहीं मानता हो उसकी भारतीय नागरिकता समाप्त की जाये।

शेष पृष्ठ 6 का

१५ नवम्बर नाथूराम विनायक....

शुद्धि आन्दोलन में लगे स्वामी श्रद्धानन्द की अब्दुल रशीद नामक मुस्लिम युवक ने हत्या कर दी, इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप गांधी ने अब्दुल रशीद को अपना भाई कह कर उसके इस कृत्य को उचित ठहराया व शुद्धि आन्दोलन को अनर्गल राष्ट्र–विरोधी तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिये अहितकारी घोषित किया।

६. गांधी ने अनेक अवसरों पर शिवाजी, महाराणा प्रताप व गुरू गोबिन्द सिंह को पथभ्रष्ट देशभक्त कहा।

७. गांधी ने जहाँ एक ओर कश्मीर के हिन्दू राजा हरि सिंह को कश्मीर मुस्लिम बहुल होने से शासन छोड़ने व काशी जाकर प्रायश्चित करने का परामर्श दिया, वहीं दूसरी ओर हैदराबाद के निजाम के शासन का हिन्दू बहुल हैदराबाद में समर्थन किया।

८. यह गांधी ही थे जिन्होंने मोहम्मद अली जिन्ना को कायदे–आजम की उपाधि दी।

९. कांग्रेस के ध्वज निर्धारण के लिये बनी समिति (१९३१) ने सर्वसम्मति से चरखा अंकित भगवा वस्त्र पर निर्णय लिया किन्तु गांधी की जिद के कारण उसे तिरंगा कर दिया गया।

१०. कांग्रेस के त्रिपुरा अधिवेशन में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को बहुमत से काँग्रेस अध्यक्ष चुन लिया गया किन्तु गांधी पट्टाभि सीतारमय्या का समर्थन कर रहे थे, अतः सुभाष बाबू ने निरन्तर विरोध व असहयोग के कारण पद त्याग दिया।

११. लाहौर कांग्रेस में वल्लभभाई पटेल का बहुमत से चुनाव सम्पन्न हुआ किन्तु गांधी की जिद के कारण यह पद जवाहरलाल नेहरु को दिया गया।

१२. १४–१५ १९४७ जून को दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में भारत विभाजन का प्रस्ताव अस्वीकृत होने वाला था, किन्तु गांधी ने वहाँ पहुँच कर प्रस्ताव का समर्थन करवाया। यह भी तब जबकि उन्होंने स्वयं ही यह कहा था कि देश का विभाजन उनकी लाश पर होगा।

१३. जवाहरलाल की अध्यक्षता में मंत्रीमण्डल ने सोमनाथ मन्दिर का सरकारी व्यय पर पुनर्निर्माण का प्रस्ताव पारित किया, किन्तु गांधी जो कि मंत्रीमण्डल के सदस्य भी नहीं थे, ने सोमनाथ मन्दिर पर सरकारी व्यय के प्रस्ताव को निरस्त करवाया और १३ जनवरी १९४८ को आमरण अनशन के माध्यम से सरकार पर दिल्ली की मस्जिदों का सरकारी खर्चे से पुनर्निर्माण कराने के लिए दबाव डाला।

१४. पाकिस्तान से आये विस्थापित हिन्दुओं ने दिल्ली की खाली मस्जिदों में जब अस्थाई शरण ली तो गांधी ने उन उजड़े हिन्दुओं को जिनमें वृद्ध, स्त्रियाँ व बालक अधिक थे मस्जिदों से खदेड़ बाहर ठिठुरते शीत में रात बिताने पर मजबूर किया गया।

१५. २२ अक्टूबर १९४७ को पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया, उससे पूर्व माउण्टबैटन ने भारत सरकार से पाकिस्तान सरकार को ५५ करोड़ रुपये की राशि देने का परामर्श दिया था। केन्द्रीय मंत्रीमण्डल ने आक्रमण के दृष्टिगत यह राशि देने को टालने का निर्णय लिया किन्तु गांधी ने उसी समय यह राशि तुरन्त दिलवाने के लिए आमरण अनशन शुरू कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप यह राशि पाकिस्तान को भारत के हितों के विपरीत दे दी गयी।

मृत्यु दण्ड : नाथूराम गोडसे को सह–अभियुक्त नारायण आप्टे के साथ १५ नवम्बर १९४९ को पंजाब की अम्बाला जेल में फाँसी पर लटका कर मार दिया गया। उन्होंने अपने अन्तिम शब्दों में कहा था यदि अपने देश के प्रति भक्तिभाव रखना कोई पाप है तो मैंने वह पाप किया है और यदि यह पुण्य है तो उसके द्वारा अर्जित पुण्य पद पर मैं अपना नम्र अधिकार व्यक्त करता हूँ।

शेष पृष्ठ 1 का

भारत समेत ४ देशों की गोलबंदी.....

मामलों की कार्यवाहक सहायक सचिव एलिस वेल्स ने कहा था कि अमेरिका जल्द ही कार्यस्तर का एक चर्तुपक्षीय सम्मेलन करने जा रहा है। पिछले महीने भारत दौरे पर आए अमेरिका के विदेशमंत्री रेक्स टिलरसन ने कथित तौर भारत से चीन के बेल्ट व रोड परियोजनाओं के विकल्प के रूप सड़कों व राजमार्गो का नेटवर्ग बनाने के संबंध में बातचीत की थी। चीन की अरबों डॉलर की बेल्ट व रोड परियोजनाए जिसका प्रमुख मार्ग पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरने वाला चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा है, का भारत विरोध करता रहा है। ऑस्ट्रेलिया सरकार में भी कुछ लोग यह मानते हैं कि चीन की यह परियोजना महज एक आर्थिक परियोजना नहीं है, बल्कि यह भू–राजनीति का हिस्सा है। दौरे से वापसी पर टिलरसन ने हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर समेत भारत–प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका, जापान, भारत और ऑस्ट्रेलिया को एंकर यानी लंगर बताया था। हिंद महासागर में चीन की उपस्थिति से भारत की चिंता बढ़ गई है, वहीं जापान भी चीन की नौसेना की ताकत बढ़ने से परेशान है, एशिया की दोनों शक्तियों के बीच पूर्वी चीन सागर स्थित द्वीपों को लेकर विवाद है

शेष पृष्ठ 8 का

इतिहास स्वयं को दोहराता.....

१. **अल्लाह के लिये जिहाद करना :** यहाँ जिहाद का अर्थ है—गैर—मुसलमानों को किसी भी प्रकार से मुसलमान बनाना और उनके देशों में इस्लामी राज्य व्यवस्था स्थापित करना। **संक्षेप में, ''जिहाद ही इस्लाम है और इस्लाम ही जेहाद है''। जिहाद के बिना इस्लाम धर्म का कोई अस्तित्व नहीं है।** इस्लाम की स्थापना (६१० ई. ए.डी.) के बाद से ही इस्लामी आतंकवादी जिहाद पहले अरेबिया पश्चात सारे विश्व में जारी है।

२. **तेजी से मुसलमानों की आबादी बढ़ाना :** चाहे मुसलमान कितने ही पिछड़े व गरीब क्यों न बने रहें परन्तु वे कुरान और हदीसों की आज्ञाओं के अनुसार परिवार नियोजन न अपनाने को विवश हैं।

मुसलमानों को इस्लामी धर्मशास्त्रों में अल्लाह की आज्ञा है—

१. **कोई भी मुसलमान अविवाहित न रहे।**

२. **वे सामर्थ्यानुसार एक से लेकर ४ पत्नियाँ तक रखें।**

३. **वे मुस्लिम, धार्मिक, आज्ञाकारी और अधिक संतान देने की क्षमता वाली स्त्रियों से शादी करें और अधिक सन्तान उत्पन्न करें, ताकि कयामत के दिन विश्व में मुसलमानों की संख्या गैर-मुसलमानों से अधिक हो सके।**

शेष पृष्ठ 7 का

हिन्दुत्व के स्वर्णिम इतिहास.....

भूमिगत उपायों से छपवाने में सावरकर जी सफल रहे। किन्तु भारत का यथार्थ इतिहास लिखने का दण्ड सावरकर को मिला, उन्हें अण्डमान की काल कोठरी में भयानक यातनाएँ भोगनी पड़ीं। ऐसा ही इतिहास जब भाई परमानन्द ने लिखा (तारीखे हिन्द) तो उनके विषय में अंग्रेज न्यायाधीश ने लिखा कि यह इतिहास तो सावरकर के लिखे इतिहास से भी अधिक खतरनाक है। अतः भाई परमानन्द को फाँसी दी जानी चाहिए। तीन जजों की पीठ में दो अंग्रेज थे, दोनों ने फाँसी का आदेश दिया। तीसरे भारतीय जज ने आजीवन कारावास का आदेश दिया। भाई जी को अण्डमान के कारावास में भेजा गया, जहाँ वर्षों तक उन्हें देशभक्ति का इतिहास लिखने पर भीषण यातनाएँ झेलनी पड़ीं। ऐसा ही इतिहास जब डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल ने 'हिन्दू राज्य शास्त्र' के नाम से लिखा और छपवाने के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति को सौंप दिया तो उपकुलपति के घर चोरी हो गई और अन्य सामान नहीं केवल 'हिन्दू राज्य शास्त्र' की पाण्डुलिपि चुरा ली गई। यह अलग बात है कि बाद में वह पुस्तक भी छप गई। भाई परमानन्द के घर में भी चोरी कराई गई और भारत का स्वाधीनता इतिहास 'तारीखे हिन्द' की सारी सामग्री चुरा ली गई जो इस कारण कभी छापी नहीं जा सकी। **क्यों डरते थे अंग्रेज इस इतिहास से? क्यों दी जाती थी यातनाएँ ऐसा लिखने वालों को? क्यों चुरा ली जाती थी इतिहास की वह दुर्लभ सामग्री।**

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-
सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये
द्विवार्षिक.....300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता के नाम भेजें।

पता :- **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट :- **केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**

शेष पृष्ठ 9 का

१६ नवम्बर जयंती पर.....

रुपये मासिक पेंशन लेने को कहा पर महारानी ने इसे लेने से मना कर दिया। पर बाद में उन्होंने इसे लेना स्वीकार किया तो अंग्रेजी हुकूमत ने यह शर्त जोड़ दी कि उन्हें अपने स्वर्गीय पति के कर्ज को भी इसी पेंशन से अदा करना पड़ेगा, अन्यथा यह पेंशन नहीं मिलेगी। इतना सुनते ही महारानी का स्वाभिमान ललकार उठा और अंग्रेजी हुकूमत को उन्होंने संदेश भिजवाया कि जब मेरे पति की उत्तराधिकारी न मुझे माना गया और न ही मेरे पुत्र को, तो फिर इस कर्ज के उत्तराधिरी हम कैसे हो सकते हैं? उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत को स्पष्टतया बता दिया कि कर्ज अदा करने की बारी अब अंग्रेजों की है न कि भारतीयों की। इसके बाद घुड़सवारी व हथियार चलाने में माहिर रानी लक्ष्मीबाई ने ब्रिटिश सेना को कड़ी टक्कर देने की तैयारी आरंभ कर दी और उद्घोषणा की कि—''मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी!'' रानी लक्ष्मीबाई द्वारा गठित सैनिक दल में तमाम महिलायें शामिल थीं। उन्होंने महिलाओं की एक अलग ही टुकड़ी 'दुर्गा दल' नाम से बनायी थी। इसका नेतृत्व कुश्ती, घुड़सवारी और धनुर्विद्या में माहिर झलकारीबाई के हाथों में था। झलकारीबाई ने कसम उठायी थी कि जब तक झांसी स्वतंत्र नहीं होगी, न ही मैं श्रृंगार करूंगी और न ही सिन्दूर लगाऊँगी। अंग्रेजों ने जब झांसी का किला घेरा तो झलकारीबाई जोशे—खरोश के साथ लड़ी। चूँकि उनका चेहरा और कद—काठी रानी लक्ष्मीबाई से काफी मिलता—जुलता था, सो जब उसने रानी लक्ष्मीबाई को घिरते देखा तो उन्हें महल से बाहर निकल जाने को कहा और स्वयं घायल सिंहनी की तरह अंग्रेजों पर टूट पड़ीं और शहीद हो गईं। रानी लक्ष्मीबाई अपने बेटे को कमर में बाँधे घोड़े पर सवार किले से बाहर निकल गई और कालपी पहुँची, जहाँ तात्या टोपे के साथ मिलकर ग्वालियर के किले पर कब्जा कर लिया। अन्ततः १८ जून १८५८ को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की इस अद्भुत वीरांगना ने अंतिम सांस ली पर अंग्रेजों को अपने पराक्रम का लोहा मनवा दिया। तभी तो उनकी मौत पर जनरल ह्यूगरोज ने कहा—''यहाँ वह औरत सोई हुई है, जो विद्रोहियों में एकमात्र मर्द थी।'' इतिहास अपनी गाथा खुद कहता है। सिर्फ पन्नों पर ही नहीं बल्कि लोकमानस के कंठ में, गीतों और किवदंतियों इत्यादि के माध्यम से यह पीढ़ी—दर—पीढ़ी प्रवाहित होता रहता है। वैसे भी इतिहास की वही लिपिबद्धता सार्थक और शाश्वत होती है जो बीते हुये कल को उपलब्ध साक्ष्यों और प्रमाणों के आधार पर यथावत प्रस्तुत करती है। बुंदेलखंड की वादियों में आज भी दूर—दूर तक लोकलय सुनाई देती है

खूब लड़ी मरदानी, अरे झाँसी वारी रानी
पुरजन पुरजन तोपें लगा दई, गोला चलाए असमानी
अरे झाँसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी
सबरे सिपाइन को पैरा जलेबी, अपन चलाई गुरधानी
छोड़ मोरचा जसकर कों दौरी, ढूढ़ेहूँ मिले नहीं पानी
अरे झाँसी वारी रानी, खूब लड़ी मरदानी।

माना जाता है कि इसी से प्रेरित होकर 'झांसी की रानी' नामक अपनी कविता में सुभद्राकुमारी चौहान ने ने १८५७ की उनकी वीरता का बखान किया है—

चमक उठी सन् सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी
बुन्देलों हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।

शेष पृष्ठ 1 का

अखिल भारत हिन्दू महासभा प्रांतीय.....

झण्डा, एक समान नागरिक कानून का निर्माण, धारा ३७० को खत्म करने, राम मंदिर का अविलम्ब निर्माण के लिए संकल्पित हैं। हम लगातार हिन्दू जागरण, संगठन विस्तार एवं हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

राष्ट्रीय महासचिव श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि भारत में गौ हत्या पर पूर्णतः रोक लगाना हमारा लक्ष्य है। केन्द्र सरकार बांग्लादेशी एवं रोहिंग्या मुसलमानों का भारत में प्रवेश पर पूर्णतः रोक लगाये एवं जो भारत में प्रवेश कर चुका है, उसे अविलम्ब भारत से बाहर निकाले, नहीं तो हिन्दू महासभा राष्ट्रव्यापी जनआंदोलन करेगी। उन्होंने कहा कि बड़े पैमाने पर हिन्दुओं का धर्मांतरण हो रहा है। लव जेहाद द्वारा मुस्लिम युवक व मुस्लिम संस्थायें मिलकर हिन्दू युवतियों का जीवन नरक बना रहा है। हमें इसे तत्काल रोकना है। अल्पसंख्यक तुष्टीकरण भारत में बंद किया जाए। पं० प्रमोद जोशीजी ने सभी हिन्दुओं से राम मंदिर का जल्द निर्माण कराने के लिए समर्थन का आवाहन किया एवं सरकार से अविलम्ब सहमती बनाकर राम मंदिर का निर्माण कराने की मांग की।

साध्वी पूजा सकुन पांडेय जी ने कहा कि हम हिन्दुओं को जातिवाद में बटने नहीं देगें, हम हिन्दुओं को संगठित करके बदलाव करके दिखाएंगे। भाजपा को हिन्दुओं ने ही वोट देकर सत्ता दिलाया है। मोदी जी एवं झारखण्ड सरकार उस हिन्दुओं के मत का मान रखने एवं उनकी भावनाओं पर खरा उतरने में असफल हुई है। उन्हें चेतावनी देना चाहती हूँ कि राम मंदिर का निर्माण, हिन्दू राष्ट्र का निर्माण एवं एक समान नागरिक कानून का निर्माण नहीं किया तो हिन्दू समाज उन्हें २०१९ में सबक सिखाएगी। सभा को अशोक पाण्डे, राज श्री चौधरी, मन्नू तिवारी, रेखा रानी, ईश्वर चन्द्र गुप्ता, सत्येम श्रीवास्तव, बबलू पाण्डे, अनिल सिंह, आदि ने संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन सुरेन्द्र सिंह ने किया।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

12 साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता निष्कर्ष दिनांक 15 नवम्बर से 21 नवम्बर 2017 तक

यह भी सच है

डॉ॰ अम्बेडकर ने धर्मान्तरण के लिए इस्लाम या ईसाइयत को क्यों नहीं चुना?

क्यों बौद्ध धर्म को प्रधानता दी?

इसका उत्तर वे स्वयं इस प्रकार देते हैं : "यदि वे इस्लाम धर्म स्वीकार करते हैं तो मुसलमानों की संख्या इस देश में दूनी हो जाएगी और मुस्लिम प्रभुत्व का खतरा भी पैदा हो जाएगा। यदि वे ईसाई धर्म स्वीकार करते हैं तो ईसाइयों की संख्या अधिक बढ़ जाएगी और इससे भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व सुदृढ़ हो जाएगा।" (डॉ. अम्बेडकर : व्यक्तित्व एवं कत्र्तव्य–डॉ॰ डी॰आर॰ जाटव, पृ. २०१)

इसी संदर्भ में डॉ॰ कृष्ण गोपाल एवं श्री प्रकाश लिखते हैं कि : "हैदराबाद का निजाम करोड़ों (७ करोड़) रुपये का आश्वासन लेकर (उन्हें मुसलमान बनाने के लिए) उनके पास आया था, जिसे डॉ॰ साहब ने कतई स्वीकार नहीं किया। बड़े–बड़े ईसाई मिशनरी भी उनके पीछे पड़े कि ईसाई धर्म अपनाने से दलितों को अनेक प्रकार की सुविधाएँ मिल जाएँगी, पर आर्थिक प्रलोभन की ओर डॉ॰ साहिब का कतई ध्यान नहीं था।" (वही, पृ. ४४)

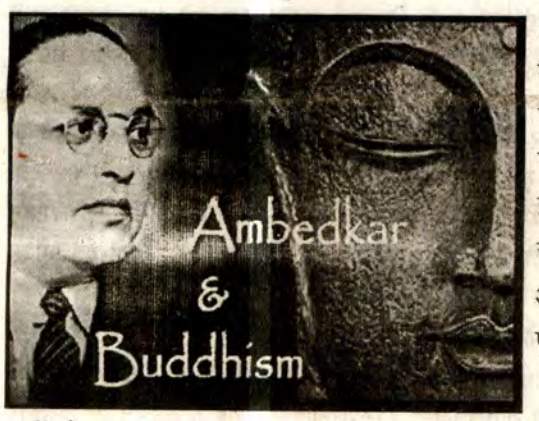

ईसाईयत दलितों की समस्याओं का समाधान नहीं है। इस संदर्भ में धनंजय कीर लिखता है "डॉ॰ अम्बेडकर ने ईसाइयों से कहा कि दक्षिण भारत में उनके सहधर्मी चर्च में जाति व्यवस्था मानते हैं... भारतीय ईसाइयों ने, एक समुदाय के रूप में, सामाजिक अन्याय को समाप्त करने के लिए कभी संघर्ष नहीं किया।" (वही, पृ. २२६) इन कारणों से उन्होंने ईसाइयत को नहीं अपनाया। डॉ॰ अम्बेडकर ने इस्लाम नहीं चुना क्योंकि वे मुस्लिम मानसिकता से भली–भाँति परिचित थे। वे उसे दलितों के लिए हानिकारक मानते थे। १९४७ में उन्होंने कहा, "मैं अनुसूचित जाति के उन लोगों को, जो इस समय पाकिस्तान में फंसे हुए हैं, यह कहना चाहता हूँ कि वे भारत आ जाएँ। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि अनुसूचित जाति के लोग चाहे वे पाकिस्तान में हो या हैदराबाद में, मुसलमानों या मुस्लिम लीग पर विश्वास न करें, यह उनके लिए घातक होगा। अनुसूचित जाति के लोगों में मुसलमानों को अपना हितैषी मानने की आदत सी बन गई है, केवल इसलिए कि उनके मनों में हिन्दुओं के प्रति रोष है। यह दृष्टिकोण ठीक नहीं है।" (ब्लिट्ज, २४ अप्रैल १९६३, एस॰के॰ अग्रवाल, डॉ॰ अम्बेडकर की दृष्टि में मुस्लिम कट्टरवाद, पृ. ६३)

डॉ॰ अम्बेडकर ने १३ अक्टूबर १९५६ को, एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि, "मैं वही मार्ग चुनूँगा जो देश के लिए सबसे कम हानिकारक होगा और, बौद्धमत में दीक्षित होकर मैं देश को सबसे बड़ा लाभ पहुँचा रहा हूँ, क्योंकि बौद्धमत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। मैंने सावधानी बरती है कि मेरे पंथ परिवर्तन से इस देश की संस्कृति और इतिहास को कोई हानि न हो।" (कीर, वही, पृ. ४९८) डॉ॰ अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म में धर्मान्तरित होकर, बुद्ध की तरह हिन्दू धर्म में सुधार लाने, और उपनिषदीय श्रेष्ठ जीवन पद्धति को अपनाने पर बल दिया तथा भारत में ही जन्मे, समता, ममता और मानवतावादी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग और हितैषी बौद्धमत को अपनाया। आशा है वर्तमान मनुवादी एवं डॉ॰ अम्बेडकर के रचनात्मक समरसतावादी, राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत विचारों से प्रेरित होकर, अलगाववाद व संघर्ष का रास्ता छोड़कर, सामाजिक सौहार्द, समरसता और सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का प्रयास करेंगे।

कबिरा खड़ा बजार में

राजनीतिक स्वास्थ्य के लिए खिचड़ी जरूरी

स्वदेशी का तड़का कैसे अपने हित में लगाना है, इसमें बाबा और मोदी को महारत हासिल है। बिजनेस गुरू बाबा रामदेव ने इस राजनैतिक खिचड़ी में जमकर तड़का भी लगाया है। वैसे तो पौष्टिक, सुपाच्य भोजन की बात हो या बीमारी के बाद मरीज के खान–पान का सवाल हो, खिचड़ी का नाम दादी–नानी के नुस्खों से लेकर डाक्टर की नसीहत सभी में आता है। खिचड़ी शरीर को ताकत देती है, यह तो पता ही था अब उसकी ताकत का साक्षात नमूना भी देख लिया। भारतीय खिचड़ी ने गिनीज बुक आफ वर्लड रिकार्ड में जगह बना ली है। दिल्ली के इंडिया गेट में शनिवार को वर्ल्ड फूड इंडिया में जाने–माने शेफ संजीव कपूर समेत ५० खानसामों ने मिलकर ६१८ किलो खिचड़ी बनाई। और छौंक लगाने की महती जिम्मेदारी उठाई पहले योग व अब बिजनेस गुरु रामदेव ने। बीते कुछ वर्षों में योग में राजनीति और व्यापार या राजनीति में योग और व्यापार या व्यापार में राजनीति और योग का तड़का उन्होंने बखूबी लगाया है। वे जानते हैं कब किस तत्व की प्रधानता होनी चाहिए। बताया जा रहा है कि दाल, चावल, बाजरा, रागी, मूंग, छिलके वाली दाल और विभिन्न मसालों से युक्त इस खिचड़ी में देसी घी का तड़का रामदेव ने लगाया है। अब यह जानना दिलचस्प होगा कि यह खिचड़ी पातंजलि के उत्पादों से तैयार हुई या भारतीय किसानों के बिना ब्रांड वाले अनाजों से। खिचड़ी बनाने में केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण मंत्री हरसिमरत कौर और राज्य मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने भी योगदान दिया। पंजाब हारने के बाद बादल परिवार के पास उपलब्धियों का टोटा पड़ गया था। लेकिन हरसिमरत कौर ने खिचड़ी का वर्ल्ड रिकार्ड बनाकर उस कमी को थोड़ा पूरा कर दिया है। दरअसल सरकार का मकसद खिचड़ी को ब्रांड इंडिया फूड के तौर पर स्थापित करना है। यह मोदी सरकार की पुरानी रीत है कि जो चीज भारत में पहले से मौजूद है, उसका ढेर सारा प्रचार कर बताते हैं कि देखो ये काम हमने किया है। अरे भाई, आपके कहने, बताने से सदियों पहले खिचड़ी भारतीय रसोई का अभिन्न अंग बन चुकी है। भारत की अनेकता में एकता की जीती–जागती तस्वीर है खिचड़ी। इसमें भी विविध खाद्य सामग्रियां मिलकर स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करती हैं। भारत के लगभग हर प्रांत में खिचड़ी अपने पारंपरिक रूप में बनती है। उत्तरभारत में मकर संक्राति का पर्व खिचड़ी ही कहलाता है और दक्षिण भारत में पोंगल, खिचड़ी का प्रतिनिधित्व करता है। गुजराती की खिचड़ी की विशेषता तो नरेन्द्र मोदी, अमित शाह जानते ही होंगे। तहेरी, पुलाव, बिरयानी भी खिचड़ी के ही रूप कहे जा सकते हैं। पंजाबी, सिंधी, जैनी खिचड़ी बनाने के अपने तरीके हैं और मालवा, बुंदेलखंड की खिचड़ी की अपनी विशेषताएं। भारतीय खिचड़ी से प्रेरित केडिग्री यूरोप का एक व्यंजन है और अंग्रेजी शब्दकोष में इसका एक अर्थ खिचड़ी लिखा है। मध्यपूर्व के देशों में कोशयारी नामक पकवान भी खिचड़ी की तरह ही कई दालों व चावल को मिलाकर बनाया जाता है। कहने का अर्थ यह कि गिनीज बुक में आने से पहले ही भारतीय खिचड़ी विदेशों में अपनी धाक जमा चुकी है। खिचड़ी के चार यार, घी, पापड़, दही, अचार जैसी तुकबंदियां हैं और सबसे मशहूर तो बीरबल की खिचड़ी का किस्सा है। लेकिन अब तो राजनीतिक तकाजे शीर्षासन करने लगे हैं। गरीब की भलाई के नाम पर राजनीति में खिचड़ी पकाना आम बात हो गई है। देखना यह है कि इंडिया गेट पर बनी खिचड़ी से मोदी सरकार को बचे दो सालों में कितनी ताकत मिलती है। वैसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सब जगह अपनी मौजूदगी का एहसास कराने वाले प्रधानमंत्री जी खिचड़ी पकाने में नजर नहीं आए, क्या वे गुजरात और हिमाचल में खिचड़ी पकाने में व्यस्त हैं।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि. सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 15 नवम्बर से 21 नवम्बर 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दि॰ मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।